Fortnightly per copy Rs. 4/- only ओ३म् 18th May 2018

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

NTERNATIONAL GURUKUL CONFERENCE

(First time in the History of Gurukul Education system)

ANTARASHTREEYA

GURUKUL MAHASAMMELAN

ON

6th, 7th, 8th JULY 2018

at

HARIDWAR

under the auspicious banner of

Saravadeshik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi

(The world Council of Arya Samaj)

on alternative Education Policy in this so called modern development age

Sir/Madam,

The world Council of Arya Samaj i.e. Saravadeshik Arya Pratinidhi Sabha New Delhi is organising an International Gurukul Conference at Haridwar, Uttarakhand State of India on 6th, 7th and 8th of July 2018 on alternative Education Policy to be introduced in India and its essentiality in the world. Arya Samaj and its apex body is a non-profitable, socio-spiritual and educational organisation working in India and abroad for last 140 years. This organisation has estabilished several Gurukuls in India and abroad on the line of oldest, logically best and having scientific tempor as pilot projects and working efficiently. Gurukul Sammelan will be a milestone in framing the Education policy in combination with Science and technology of this modern age. Saravadeshik Arya Pratinidhi Sabha New Delhi, The world Council of Arya Samaj is holding a Mahasammelan Arsh Gurukul system and its applicability at Haridwar Uttarakhand and by the by on alternative Education Policy in this so called modern development age.

Hence you being a committed worker of Arya Samaj and one of the Vedic scholar in this feild will be a resource person for framing this policy and will also be able to suggest more valuble points which are to be incorporated in draft policy. Hence we are glad to invite you and all the Arya Samaji workers for this historical conference.

please feel free to contact at 091-9849560691, 091-9013783101, 091-9466308110, 091-7015259713

or by Email on sarvadeshikarya@gmail.com, acharyavithal@gamail.com, aryavesh@gmail.com

We are eagerly looking your participation and participation all Aryans. Surely it will be not only a historical gathering but also a huge gathering. Gurukul students will be given opportunities to present their calibre in physical and educational and on other fields. Hence we need all your support i.e. tan, man our dhan se sahayog karen. All are welcome.

with regards,

Swami Aryavesh
President

Vithal Rao Arya M.Sc., LL.B
Secretary

किसी के एजेंडे में नहीं समाज निर्माण

चंद दिनों पहले तक जम्मू के कठुआ जिले का जो रसाना गांव अपरिचित-अनजाना था वह आज देश भर में चर्चा में है। अफसोस यह है कि यह चर्चा किसी नेक काम के लिए नहीं, उस भयावह घटना के कारण हो रही है जो सभ्य समाज को शर्मिंदा करने वाली है। 10 जनवरी को इस गांव की आठ साल की एक मासूम बालिका गुम हो गई। सात दिन बाद उसकी लाश मिली। आठ साल की बालिका ने कई दिनों तक वह यातना सही जिसे सुनकर किसी का भी कलेजा छलनी हो जाए। बालिका का शव बरामद होने के बाद जम्मू-कश्मीर की क्राइम ब्रांच की ओर से जो आरोप पत्र अदालत में पेश किया गया उसमें यह बात सामने आई कि उसे कई दिन बंदी बनाकर रखा गया और उससे कई लोगों ने दुष्कर्म किया। इस घटना पर केंद्रीय मंत्री वीके सिंह की टिप्पणी बहुत मार्मिक है। उन्होंने कहा, 'मनुष्य और जानवर में फर्क होना चाहिए और है भी, लेकिन कठुआ में आठ साल की मासूम के साथ जो हुआ उससे लगता है कि इंसान होना गाली है। इससे तो जानवर कहीं अच्छे हैं। जो लोग अपराधियों को धर्म की आड़ में शरण देना चाहते हैं उन्हें पता होना चाहिए कि वे भी अपराधी ही माने जाएंगे। यह याद रखना चाहिए कि बेटी बेटी है, अपराध अपराध है। उसका किसी भी धर्म संप्रदाय से संबंध नहीं।'

कठुआ की भयावह घटना के सामने आने के दौरान ही उन्नाव की एक किशोरी से दुष्कर्म का आरोप भाजपा के विधायक कुलदीप सिंह सेंगर पर लगा। शिकायत दर्ज होने के आठ माह बाद सजा पीड़ित किशोरी के पिता को मिली। विधायक के भाई ने उन्हें बुरी तरह पीटा और फिर भी पुलिस ने उन्हें ही जेल में डाल दिया, जहां उनकी मौत हो गई। उनकी मौत के बाद पीड़िता के परिवार की चीख-पुकार मीडिया के सहयोग से सरकार के कानों तक पहुंची और आखिरकार सरकार के साथ न्यायपालिका भी सक्रिय हुई। इस सक्रियता के बीच मामले की जांच सीबीआइ को सौंपी गई, जिसने विधायक को गिरफ्तार कर लिया। दुर्भाग्य से कठुआ और उन्नाव के मामले अपवाद नहीं।

अपने देश में प्रतिदिन बच्चियां, किशोरियां और महिलाएं दुष्कर्म का शिकार हो रही हैं। चंद दिन पहले झारखंड में महिला और उसकी बेटी से दुष्कर्म हुआ। गुजरात के सूरत में 11 साल की लड़की दरिंदों का शिकार होकर मौत के मुंह में चली गई। हरियाणा के रोहतक में गंदे नाले से एक बैग मिला, जिसमें आठ- दस वर्षीय बालिका की लाश मिली। संदेह है कि उससे दुष्कर्म किया गया। आखिर हमारा समाज इतना कैसे गिर सकता है कि तीन-चार साल की छोटी बच्चियों से लेकर वृद्धा तक को वासना का शिकार बनाया जा रहा है? कठुआ और उन्नाव की घटनाओं और

लक्ष्मीकांता चावला

दुष्कर्म जैसे अपराध पर लगाम लगाने का काम केवल कानून को कठोर बनाने से नहीं होने वाला

उन पर आम लोगों के रोष के बाद केंद्रीय गृहमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक ने भरोसा दिलाया कि कोई भी अपराधी हो, बचेगा नहीं। जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने भी कठुआ कांड के मामले में जल्द न्याय दिलाने के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट के गठन के लिए राज्य के हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को एक पत्र लिखा है। मुख्यमंत्री चाहती हैं कि इस मामले की नियमित सुनवाई हो और दोषियों को जल्द दंड दिया जाए। दरअसल ऐसा दुष्कर्म के सभी मामलों में होना चाहिए।

महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी ने कहा है कि 12 वर्ष से कम आयु की बच्चियों से दुष्कर्म के अपराधियों को मौत की सजा दी जा सके, इसके लिए संबंधित कानून में संशोधन किया जाएगा। अगर यह काम हो भी जाए तो भी जब तक पुलिस और जांच एजेंसियों का काम-काज नहीं सुधरता तब तक कुछ ठोस शायद ही हासिल हो। आखिर हम यह कैसे भूल सकते हैं कि हरियाणा में एक स्कूल के छात्र की हत्या में पुलिस ने किस तरह स्कूली बस के एक कर्मचारी को हत्यारा बता दिया था और यह दावा किया था कि उसे पर्याप्त प्रमाण भी मिल गए हैं।

गनीमत रही कि मामले की जांच सीबीआइ ने की और उस गरीब की जान बची। कुछ इसी तरह का एक मामला पंजाब में देखने को मिला। फिल्लौर में एक संदिग्ध अपराधी से नशे का धंधा कबूल करवाने के लिए उसके मुंह में तेजाब डाल दिया गया। दरअसल यक्ष प्रश्न यही है कि क्या हम निष्पक्ष जांच की व्यवस्था कर पाएंगे? कहीं बेकसूर और कमजोर लोगों के गले में ही तो फांसी का फंदा नहीं डाल दिया जाएगा? क्या कोई सरकार, समाज सुधारक, विचारक इस बारे में सोचेगा कि समाज में अंधवासना की प्रवृत्ति क्यों बढ़ती जा रही है? जिस देश में साबुन की एक टिकिया बेचने के लिए भी अर्द्धनग्न लड़कियों का प्रदर्शन किया जाए और अन्य विलासी चीजों को बेचने के लिए कामुकता की आग में घी डालने वाले विज्ञापन प्रचारित-प्रसारित किए जाएं तथा मादक पदार्थों की खुलेआम बिक्री पर रोक लगाने के उपाय न किए जाएं वहां क्या महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों पर लगाम लग सकती है? क्या ऐसे देश में महिलाओं को आदर से देखा जा सकता है? यह भी ध्यान रहे कि नैतिक शिक्षा को हाशिये पर ठेला जा रहा है और यहां तक कि स्कूली पाठ्यक्रमों से महापुरुषों के जीवन चरित्र गायब हो रहे हैं।

आखिर हम समाज को चरित्रवान और नैतिक बनाने के लिए कुछ क्यों नहीं करना चाहते? आज की जरूरत नेताओं के पंजे से पुलिस को मुक्त करके स्वतंत्र कार्य का अवसर देना तो है ही, भावी पीढ़ी को नैतिक शिक्षा से लैस करने की भी है। अच्छा हो कि हमारे शिक्षाशास्त्री, हमारे धर्म गुरु, हमारे समाज सुधारक अपने घरों-दफ्तरों से बाहर निकलें और समाज को सुधारने का काम अपने हाथ में लें। और भी अच्छा तो यह होगा कि हमारे धर्मगुरु कुछ समय के लिए मोक्ष-मुक्ति का रास्ता बताने के स्थान पर लोगों को यह बताएं कि समाज सदाचारी कैसे बने? वे लोगों को समझाएं कि स्वस्थ समाज कैसे बनता है? हमें यह भी समझना होगा कि दुष्कर्म जैसे अपराधों पर लगाम लगाने का काम केवल कानूनों को कठोर बनाते जाने से नहीं होने वाला। आखिर यह एक तथ्य है कि निर्भया प्रकरण के बाद महिला अपराध संबंधी कई कानून कठोर किए गए, लेकिन क्या यह कहा जा सकता है कि उसके बाद से महिलाओं के खिलाफ अपराधों पर लगाम लगी है?

(लेखिका पंजाब सरकार की पूर्व मंत्री हैं)

response@jagran.com

आर्य नेता, गरीब व मजदूरों के रहनुमा प्रो. श्योताज सिंह की स्मृति में संकल्प सभा

आर्य नेता प्रो. श्योताज सिंह जी की स्मृति में संकल्प सभा **12** मई **2018** को सार्वदेशिक सभा द्वारा दिल्ली में आयोजित की गई। जिसमें आर्य समाज के नेताओं के अतिरिक्त कई सामाजिक संगठनों के नेताओं ने प्रो श्योताज सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी अग्निवेश, स्वामी आर्यवेश, प्रेमपाल शास्त्री, रामपाल शास्त्री, रामसिंह आर्य, रामकुमार आर्य, ओम सपरा सहित कई गणमान्य नेता व सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रो. श्योताज सिंह जी का संक्षिप्त परिचय

पारिवारिक पृष्ठभूमिः हरियाणा के रेवाड़ी जिले के ग्राम जैनाबाद में सन् १९४२ में जन्में प्रो. श्योताज सिंह के पिता जी का नाम श्री चन्द्रभान यादव तथा माता जी का नाम श्रीमती सुरजी देवी था। उनका लालन-पालन उनके चाचा श्री रामस्वरूप यादव ने किया क्योंकि उनके पिता श्री चन्द्रभान जी की मृत्यु तभी हो गई थी जब प्रो. साहब एक वर्ष के थे। उनके चाचा आजाद हिन्द फौज में थे और उन्हें सात साल की काले पानी की सजा अंग्रेजों ने दी थी उसके कारण वे सिंगापुर जेल में बन्द रहे थे। उनके पिता जी भी फौज में भर्ती हुए थे तथा वहीं पर उनकी मृत्यु हो गई थी। जब श्योताज सिंह जी ने दसवीं पास की तो उनके चाचा जी ने उनकी शादी करने का दबाव बनाया किन्तु वे शादी के लिए तैयार नहीं हुये तथा इसमें उन्होंने अपने ताऊ कर्नल साहब की मदद ली और वे आजीवन अविवाहित रहते हुये वैराग्यपूर्ण जीवन के पथिक बने। उनके विचारों में देशभक्ति, सेवा, ईमानदारी तथा नैतिकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसी प्रकार धार्मिकता की प्रतिमूर्ति माता की गोद में पले-बढ़े प्रो. श्योताज सिंह जी को बचपन में ही ये संस्कार अपनी करुणामयी माता से मिले। गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान परिवार के होनहार बालक श्योताज सिंह प्रारम्भ से ही स्वाभिमानी स्वभाव के थे। पढ़ने में उनकी विशेष रुचि थी। इसीलिए अपने सभी भाई बहनों में वे अपनी विशेष प्रतिभा के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल हुये। प्रो. श्योताज सिंह जी ने एम.आर.हाईस्कूल डहीना से मैट्रिक, गवर्नमेन्ट कॉलेज नारनौल से बी.ए. तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.ए. पास की। दसवीं कक्षा में वे प्रथम स्थान पर रहे। राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर स्तर की डिग्री प्राप्त करके वे डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक नियुक्त हुए। पहले नाहड़ तथा बाद में सिधरावली, आर.बी.एस. कालेज रेवाड़ी तथा बावल में भी अध्यापन कार्य किया।

सामाजिक क्षेत्र में:- सन् १९७७ में लोकनायक जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में राष्ट्रव्यापी सत्ता परिवर्तन के समय प्रो. श्योताज सिंह ने भी अपने प्राध्यापक पद

शेष ६ पेज पर

आइए, वेदाध्ययन का व्रत लें

प्राचीन परम्परा में वेदाध्ययन द्विजमात्र का पवित्र कर्त्तव्य माना जाता था। मनु ने कहा है कि जो द्विज वेद नहीं पढ़ता वह इसी जन्म में शूद्रत्व को प्राप्त कर लेता है। पतञ्जलि कहते हैं कि ब्राह्मण को चाहिए कि वह निष्कारण ही अर्थात् बिना किसी लाभ की आशा से छहों अंगों से युक्त वेद का अध्ययन करे और उसका ज्ञान प्राप्त करे। तो आइये 'वेद क्यों ?' इसका उत्तर खोजे का यत्न करें।

साहित्यिक दृष्टि

वेदो की गणना उच्चकोटि के साहित्य में की जाती है। वेद के ही शब्दों में वेद एक ऐसा काव्य है जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है- **देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति** (अथर्व. १०.८.३२)। जो काव्य में उत्कर्षाधायक तत्त्व अभिधा, लक्षमा, व्यंजना, शब्दालंकार, अर्थालंकार आदि माने जाते हैं वे सब वेद काव्य में उत्कृष्ट रूप में विद्यमान हैं। वेद के शब्दों में विविध अर्थों को देने की जैसी शक्ति उपस्थित है, वैसी संसार प्रकार अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ, अधिराष्ट्र आदि विविध अर्थों को देने की क्षमता रखते हैं, वैसी क्षमता किसी अन्य भाषा के के गीतों से अधिक भावपूर्ण हैं। यदि हम कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, हर्ष बाणभट्ट आदि संस्कृत कवियों के साहित्य को पढ़ने में गौरव अनुभव कर सकते हैं, तो वेद का साहित्य तो उससे भी अधिक प्रांजल है। यदि हम ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, फारसी फ्रेंच, रशियन, जर्मन, तमिल, मराठी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी आदि साहित्य को पढ़ते समय यह प्रश्न नहीं उठाते कि इस साहित्य को क्यों पढ़ें, तो वैदिक साहित्य के लिए ही प्रश्नचिह्न क्यों ? साहित्य का अध्ययन स्वान्तःसुखाय होता है, वह स्वान्तःसुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करनेवाले साहित्याराधक को कहीं अधिक प्राप्त हो सकता है।

सांस्कृतिक दृष्टि

वैदिक संस्कृति संसार भर की संस्कृतियों में एक विशिष्ट संस्कृति है। वर्णाश्रमव्यवस्था, यज्ञ, दान, अतिथि-सत्कार, तपस्या, ब्रह्मचर्य, अनिवार्य शिक्षा, आतुरों की सेवा, ईश्वरपूजा, सौहार्दभावना, स्वराड्य, समृद्धि, अग्रगामिता, पाशविक शक्तियों पर विजय आदि इस संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। वैदिक संस्कृति का उपासक जिस स्तर पर खड़ा है, उससे और ऊँचा उठना चाहता है। उसकी यह अभीप्सा होती है कि पृथिवी से उठकर मैं अन्तरिक्ष में पहुँच जाऊँ, अन्तरिक्ष से उठकर द्युलोक में पहुँच जाऊँ, द्युलोक से उठकर स्वर्लोक में पहुँच जाऊँ। इस संस्कृति पर हम ही नहीं, सारा विश्व मुंग्ध हे। वैदिक संस्कृतिक का अध्ययन करने के लिए ही जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि देशों के विद्वानों ने भी वेदों का अध्ययन किया है और इतना परिश्रम किया है कि हमारा परिश्रम उसके आगे हार मानता है, यद्यपि यह दूसरी बात है कि वे कई ऐसे परिणामों पर पहुँचे हैं, जिनसे वेदाध्ययन की भारतीय विचचारधारा सहमत नहीं हो सकती। जो संस्कृति इतनी महत्त्वपूर्ण है उसका प्रामाणिक ज्ञान हम वेदों को पढ़कर ही कर सकते हैं। गम्भीर और सही पद्धति से वेदों को पढ़कर ही कर सकते हैं। गम्भीर और ही पद्धति से वेदों का अध्ययन न होने के कारण पाश्चात्त्यों ने वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध में जो कई एक अनर्थमूलक कल्पनाएँ कर डाली हैं, उनकी परीक्षा भी हम वेदों का गहन अध्ययन करके ही कर सकते हैं।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि

भाषाविज्ञान पाश्चात्त्य देशों में नवीन विज्ञान के नाम से उदित हुआ है, जिसे आरम्भ हुए लगभग डेढ़ सौ र्व ही हो पाये हैं, यद्यपि भारतीय अलंकारशास्त्री और वैयाकरण विद्वान् पहले ही इसके अनेक अंगों पर पर्याप्त अनुसन्धान कर चुके थे। यह भाषाविज्ञान ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, भारत की प्रान्तीय भाषाओं आदि के तुलनात्मक अध्ययन से विकसित हआ है और आज भी यह विकासोन्मुख ही है, क्योंकि इसके सिद्धान्त अभी अन्तिम रूप से मान्य नहीं कहे जा सकते। इस भाषाविज्ञान के विकास में वैदिक भाषा के अध्ययन ने विशेष योगदान दिया है और आगे भी दे सकता है। आज भाषाविज्ञान में भारोपीय भाषा-परिवार सबसे बड़ा और महत्तवपूर्ण परिवार माना जाता है, जिसका उद्‌गम किन्हीं अंशों में वैदिक भाषा ही मानी जा सकती है। आज का भाषाविज्ञानी इस भारोपीय भाषा-परिवार से भिन्न परिवारों को सर्वथा स्वतन्त्र मानता है और उनका वैदिक भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं स्वीकार कता, किन्तु वैदक भाषा ही मानी जा सकती है। आज का भाषाविज्ञानी इस भारोपीय भाषा-परिवार से भिन्न परिवारों को सर्वथा स्वतन्त्र मानता है और उनका वैदिक भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं स्वीकार करता, किन्तु वैदिक भाषा के अधिकाधिक तुलनात्मक अध्ययन से भविष्य में सम्भव है हम इस परिणाम पर भी पहुँच कें कि सभी भाषापरिवार किसी सीमा तक वैदिक भाषा के ऋणी हैं। तब भाषाविज्ञान के क्षेत्र में वेद और भी अधिक महत्त्व की वस्तु बन जाएँगे। एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी वेदों का एवं वैदिक भाषा का अध्ययन स्वागतयोग्य है।

धार्मिक दृष्टि

भारतीय धर्मशास्त्र में वेदों का सबसे अधिक महत्त्व माना गया है। मनुस्मृति के

अनसार धर्म-अधर्म का संशय उपस्थित होने पर उसका निर्णय तीन वेदज्ञों की एक परिषद् करती है, जिसमें एक ऋग्वेद का ज्ञाता, दूसरा यजुर्वेद का ज्ञाता तथा तीसरा सामवेद का ज्ञाता होता है (मनु. १२.१९२)[१]। मनु का यह भी कथन है कि वेदज्ञ विद्वान् अकेला भी जिसे धर्म घोषित कर दे उसे धर्म जानना चाहिए, अज्ञ लोग दस हज़ार भी क्यों न हों, नसे कही गई बात धर्म नहीं मानी जा सकती । (मनु.१२.१९३)[२] । यदि वेद और स्मृति आदि में कहीं परस्पर विरोध हो तो उस दशा में वेद की बात ही प्रामाणिक मानी जाएगी, यह सर्वमान्य सिद्धान्त रहा है। उदाहरणार्थ, यदि किसी स्मृति में स्त्रियों को वेदाध्ययन के अधिकार से वञ्चित किया गया है, तो स स्मृति की यह बात वेदविरुद्ध होने से मान्य नहीं है । इसी प्रकार यदि किसी धर्मग्रन्थ में यज्ञों में पशुबलि देने का विधान है, तो यह भी वेदविरुद्ध होने से त्याज्य ठहरेगा । मध्यकाल में वेदों के नाम पर अनेक वेदविरुद्ध बातें बालविवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा, अनेकेश्वरवाद, जन्मूलक वर्णव्यवस्था, मृतक-श्राद्ध आदि प्रचलित हो गयी थीं, स्वामी दयान्द के समय भी चल रही थीं और कुछ आज भी चल रही हैं। स्वामी दयानन्द इन बेदविरुद्ध कुप्रथाओं का खण्डन अपने अगाध वेद-पाण्डित्य के बल पर ही कर सके । आज भी विपक्षियों की ओर से लेख लिखे जाते हैं कि गोहत्या और गोमांस-भक्षण वेदानुमोदित है, वेदों में नारी की घृणित स्थिति है, सतीप्रथा वेद से ही आयी है, धार्मिक असहिष्णुता वेदों की ही देन है आदि । वेदों पर थोपी जानेवाली इस प्रकार की वेदविरुद्ध बातों का खण्डन हम तभी कर सकेंगे, जब हमारा वेदों का गम्भीर अध्ययन होगा ।

धार्मिक दृष्टि से कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध करने के लिए भी वेदाध्ययन की आवश्यकता है । क्या धर्म है और क्या अधर्म है, यह वेद ही बतलाता है । पर वेद उसे ही बतला सकता है, जो वेदज्ञ है । अल्पश्रुत व्यक्ति वेद से धर्माधर्म का बोध प्राप्त नहीं कर सकते । इसलिए उक्ति प्रसिद्ध है कि अल्पश्रुत व्यक्ति से वेद भय खाता है कि यह तो उल्टा मुझ पर ही प्रहार कर देगा- **भिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति ।** यही सब ध्यान में रखकर आर्यसमाज के नियमों में यह सम्मिलित किया गया है कि "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।"

अनुसन्धानात्मक दृष्टि

वैदिक भाषा और वैदिक साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण है, यह हम अभी ऊपर कह चुके हैं । भारत के प्राचीन मनीषियों ने वेदों पर बहुत कुछ अनुसन्धान किया था । प्रातिशाख्यकारों ने एवं आचार्य पाणिनि आदि वैयाकरणों ने वैदिक भाषा का सूक्ष्म अध्ययन करके तत्सम्बन्धी नियमों का आविष्कार किया था । याज्ञवल्क्य आदि ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं श्रौतसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर याज्ञिक कर्मकाण्ड तैयार किया था । गृह्यसूत्रकारों ने वेदों के आधार प जातकर्म, नामकरण आदि संस्कारों की सृष्टि की थी । अनुक्रमणीकारों ने वेदमन्त्रों के ऋषि, देवता, छन्दों का पर्यवेक्षण किया था । वेदों के ही आधार पर आरण्यकग्रन्थों एवं उपनिषदों की रचना हुई थी । ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं नैरुक्तों ने वेदार्थ का अनुसन्धान किया था । कतिपय वेद-भाष्यकार भी इसमें सहायक हुए थे । महर्षि दयानन्द ने इस वेदानुसन्धान को और आगे बढ़ाया । वेदविरुद्ध प्रचलित मिथ्या धारणाओं को चलपूर्वक झकझोरा और सत्य वेदार्थ को प्रकाशित किया, वेदार्थ के सम्बन्ध में अनेक नवीन दिशाओं को प्रशस्त किया । आज भी वेद प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वैदिक भाषा पर, वेदार्थ पर और वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर सही दिशा में अनुसन्धान हो । वेदों के अनेक सूक्त रहस्यों से भरे हुए हैं, उन रहस्यों का उद्घाटन आज भी अपेक्षित है । वैदिक भाषा पर प्रातिशाख्यों, पाणिनि के वैदिक व्याकरण और मैकडानल की 'वैदिक ग्रामर' के होते हुए भी आज भी अनुसन्धान की आवश्यकता है । हम वेदानसन्धान की दिशा को पाश्चात्य विरधारा के चाकचक्य से मुक्त करके उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करते हुए एक नया मोड़ दे सकते हैं और वह नया मोड़ होगा दयानन्द प्रदर्शित वैदिक मान्यताओं के प्रकाश में ।

आर्थिक दृष्टि

छात्रों की दृष्टि से वेदाध्ययन के आर्थिक पक्ष पर भी विचार कर लेना उचित होगा, क्योंकि आज का युग अर्थ का युग है और इसमें वही विद्या प्रशस्त मानी जाती है जो अर्थकरी हो । प्रश्न यह है क वेद के छात्र क्या आर्थिक दृष्टि से सफल हुए हैं या हो सकते हैं ? हमारा कहना है कि वे वैसे ही सफल हुए हैं और हो सकते हैं, जैसे संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशात्र आदि विषयों को पढ़नेवाले छात्र होते हैं । वर्तमान काल में भारत में वेदाध्ययन के तीन प्रकार के केन्द्र हैं । प्रथम आर्य समाज द्वारा चलाये जानेवाले गुरुकुल हैं, जिनमें स्नातक-स्तर तक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, दर्शनशास्त्र आदि विषयों के साथ अनिवार्यतः वेद भी पढ़ाया जाता है और स्नातकोत्तर कक्षाओं में छात्र स्वतन्त्र रूप से वैदिक साहित्य की ही स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के लिए अथवा संस्कृत के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अर्न्तगत वेद पढ़ते हैं और पी-एच.डी. की उपाधि हेतु वैदिक विषयों पर शोध करते हैं । दूसरे वेदाध्ययन के केन्द्र हैं विविध विश्वविद्यालयों के संस्कृत-विभाग, जहाँ एम.ए. में एकक पत्र तो अनिवार्य रूप से वेद का पढ़ाया ही जाता है, उसके अतिरिक्त छात्र अपनी रुचि के अनुसार कई वैकल्पिक समहों में से वेद का समूह भी चुन सकते हैं, जिसमें वैदिक साहित्य के दो या तीन पत्र होते हैं । तीसरे वेदाध्ययन के केन्द्र हैं संस्कृत विश्वविद्यालय तथा उनके अधीन चलनेवाले संस्कृत-महाविद्यालय । इनमें शास्त्री परीक्षा तक अन्य विषयों के साथ वेद भी पढ़ाया जाता है और साहित्यशास्त्री, व्याकरणशास्त्री आदि के समान वेदशास्त्री भी एक स्वतन्तर परीक्षा

होती है, जिसमें मुख्यतः वेद का ही पाठ्यक्रम रहता है । आगे आचार्य परीक्षा में भी साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य आदि के समान वेदाचार्य की भी पृथक् स्वतन्त्र परीक्षा होती है, जिसमें सब पत्र वेद के ही होते हैं । वेदाचार्य परीक्षा के पश्चात् वैदिक शोध का भी प्रावधान रहता है । अनुभव में आया है कि इन तीनों ही केन्द्रों से पढ़े हुए वेद के स्नातक अर्थोपार्जन की दृष्टि से अन्य विषय पढ़े हुए स्नातकों से पीछे नहीं हैं । वे उक्त तीनों प्रकार के केन्द्रों में ही वेद के अध्यापक, प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष आदि पदों पर नियुक्ति पा लेते हैं । इसके अतिरिक्त विभिन्न वेदानुसन्धानपीठों में या सरकारी सेवाओं में भी वे स्थान पा सकते हैं । जिनकी रुचि हो वे वेदोपदेशक भी बन सकते हैं ।

यह तो है छात्रों की बात । पर केवल छात्रों को ही नहीं, अपितु बालक, युवक, वृद्ध, नर-नारी सभी को चाहिए कि प्रतिदिन वैदिक स्वाध्याय करें, और वेद में जो कर्त्तव्य-प्रेरणाएँ की गयी हैं, जो उद्‌बोधन दिया गया है, जिस ओजस्विता, आशावाद, आत्म-विशस एवं अग्रगामिता का सन्देश दिया गया है उससे अनुप्राणित होकर जीवन में सदा अग्रगामी बने रहें । प्राचीनकाल में श्रावण पूर्णिमा को वेदाध्ययन का सत्र प्रारम्भ होता था और सम्मिलित वेदपाठ की ध्वनि से दिशाएँ मुखरित हो जाती थीं, साथ ही वेदार्थ का अनुसन्धान भी होता था । ऋग्वेद के मण्डूक-सूक्त मे वर्षा ऋतु में मेंढकों के संगीत की उपमा व्रतचारी ब्राह्मण बटुओं के सस्वर वेदपाठ से दी गयी है । इसी का अनकरण करते हुए कवि तुलसी ने भी कहा है-**'दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई, बेद पढ़त जनु बदु समुदाई'** । आइए, हम सब मिलकर वेदाध्ययन का व्रत धारण करें ।

पाद-टिप्पणियाँ

१.ऋग्वेदविद् यजुर्विच्च सामवेदविदेव च ।
त्र्यवरा परिषज्ज्ञेय धर्मसंशयनर्णये ॥

२.एकोऽपि वेदविद धर्म यं व्यवस्येद्
द्विजोत्तमः ।स विज्ञेयः परो धर्मो
नाज्ञानामुदितो ऽयुतैः ॥

पेज ३का शेष ...

को त्यागकर सामाजिक जीवन में पदार्पण किया। हरियाणा की जनता पार्टी सरकार में शिक्षामंत्री बने आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के साथ जुड़ गये तथा उनके राजनीतिक सलाहकार के रूप में सहयोगी बने। सन् १९८० में जब स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में बंधुआ मजदूरी प्रथा के विरूद्ध ऐतिहासिक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तब आप भी बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापकों में थे तथा प्रारम्भ से इस संगठन के आप पहले मंत्री तथा बाद में महामन्त्री बने और जीवन की आखिरी श्वांस तक इसी पद पर कार्य करते रहे।

कार्य एवं गतिविधियाँः बंधुआ मुक्ति मोर्चा के साथ-साथ प्रो. श्योताज सिंह आर्य समाज के भी एक मजबूत स्तम्भ थे। स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में आर्यसमाज की समस्त गतिविधियों में वे सदैव अग्रणी रहे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से पत्थर खदानों, ईंट भट्ठों, चूड़ी एवं कालीन उद्योगों तथा विविध क्षेत्रों में प्रचलित बन्धुआ मजदूरी प्रथा के विरूद्ध चलाये गये प्रचण्ड आन्दोलन से पूरे देश में लगभग दो लाख बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने में प्रो. श्योताज सिंह ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान उनके ऊपर खान माफिया द्वारा कातिलाना हमले भी किये गये। कई बार जानलेवा हमलों में वे घायल हुये किन्तु ईश्वर की कृपा से स्वस्थ होकर पुनः कार्य में जुट गये। बंधुआ मजदूरी प्रथा के अभिशाप के अतिरिक्त उन्होंने किसानों, महिलाओं, दलितों, पीड़ितों तथा शोषितों के लिए समयत्र पर चले आन्दोलनों में न केवल भाग लिया बल्कि उनका कुशल संयोजन भी किया। इसी तरह आर्य समाज द्वारा चलाये गये शराबबंदी आन्दोलन, किसान आन्दोलन, कन्याभ्रूण हत्या विरोधी आन्दोलन तथा पाखण्ड विरोधी आन्दोलन आदि में भी प्रो. श्योताज सिंह ने अपने विशिष्ट साथियों सर्वश्री स्वामी आर्यवेश, विरजानन्द, प्रो. विट्ठलराव, डॉ. जे.एस. यादव, प्रो. के.सी. यादव तथा स्वामी विजयवेश आदि के साथ अग्रणी नेता की भूमिका निभाई। स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में बंधुआ मुक्ति मोर्चा के तत्वावधान में दिल्ली से देवराला तक की सती प्रथा विरोधी जन-चेतना यात्रा का आपने कुशल संयोजन किया जिसके परिणामस्वरूप पहली बार देश में सती प्रथा के विरुद्ध कड़ा कानून बनाया गया। इसी प्रकार हरियाणा में किये गये शराबबन्दी आन्दोलनों का भी आपने संयोजन किया जिसके फलस्वरूप हरियाणा सरकार ने पूरे प्रदेश में शराबबन्दी लागू की।

विदेश यात्रायेंः मानव अधिकारों के सवाल पर देश-विदेश में बड़े-बड़े मंचों पर उन्होंने आवाज उठाई। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (प्स्व्) तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनारों में वे जेनेवा (स्विट्जरलैण्ड), मास्को (रूस), फ्रैंकफर्ट (जर्मनी), न्यूयार्क एवं वाशिंगटन डी.सी. (अमेरिका), सिंगापुर, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशों में सम्मिलित हुये तथा अपनी प्रखर शैली में मानव अधिकारों पर आवाज उठाई।

प्रो. साहब एक कुशल वक्ता, प्रखर लेखक, गम्भीर मनीषी, स्वाध्यायशील, परोपकारी, संघर्षशील, गरीबों के मसीहा थे। उनका जीवन सादगी, सात्विकता, मितव्ययता, त्याग एवं तप जैसे गुणों से ओत-प्रोत था। उनका एक-एक श्वांस समाज के शोषित एवं पीड़ित लोगों की सेवा, मानवीय मूल्यों तथा प्राचीन वैदिक संस्कृति के लिए प्रचार-प्रसार में बीता। प्रो. श्योताज सिंह आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी के सदस्य, युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कोषाध्यक्ष, स्वामी इन्द्रवेश प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य, अग्निलोक आश्रम बहल्पा (गुड़गांव) के संचालक, 'राजधर्म' पत्रिका के सम्पादक, धर्म प्रतिष्ठान के सदस्य, गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजमेन्ट कमेटी के उपप्रधान आदि महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुये लगभग ४० वर्ष समाज सेवा में समर्पित रहे। देश की समस्त समस्याओं का समाधान राजनीतिक ताकत से सम्भव है, इस विचार से प्रभावित होकर उन्होंने राजनैतिक गतिविधियों में भी अपनी भूमिका निभाई। जाटूसाना क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव भी लड़ा, गाँव की पंचायत के भी वे सदस्य रहे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी गुणों से सम्पन्न था। २८ अप्रैल, २०१८ को ब्रह्ममुहूर्त में वे अपने नश्वर शरीर को त्यागकर अनन्त यात्रा को प्रस्थान कर गये। उनके निधन से समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर बहुत कुछ लिखने की जरूरत है। यहाँ पर उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित है।

वेदों का आविर्भाव कब, कैसे व क्यों हुआ?

–मनमोहन कुमार

संसार में जितने भी पदार्थ है उनकी उत्पत्ति होती है और उत्पत्ति में कुछ मूल कारण व पदार्थ होते हैं जो अनुत्पन्न वा नित्य होते हैं। इन मूल पदार्थों की उत्पत्ति नहीं होती, वह सदा से विद्यमान रहते हैं। उदाहरण के लिए देखें कि हम चाय पीते हैं तो यह पानी, दुग्ध, चीनी व चायपति से मिलकर बनती है। ईधन, चाय के पात्र आदि इसमें साधारण कारण होते हैं। चाय के लिए आवश्यक सभी पदार्थों को चाय बनाने के कारण पदार्थ कहते हैं। चाय बनाने में प्रयोग की जाने वाली चीनी गन्ने के रस से बनती है। गन्ने को किसान अपने खेतों में उत्पन्न करता है। गन्ने के लिए खेत में गन्ने का बीज बोया जाता है अथवा गन्ने की कलम रोपी जाती है। खेत हमारी सृष्टि का ही एक अंग है। यह सृष्टि अणुओं व परमाणुओं से मिलकर बनी है। परमाणु इलेक्ट्रान, प्रोटान व न्यूट्रान आदि कणों से बने हैं। परमाणुओं से पूर्व की स्थिति पर विज्ञान में भी सम्भवतः विचार नहीं किया जाता। परमाणु किस पदार्थ से कैसे बने इसका ज्ञान उपलब्ध नहीं है। अतः परमाणु ही कार्य सृष्टि का मूल पदार्थ है जिससे उत्तरोत्तर कई चरणों में यह समस्त सृष्टि बनी है। दर्शन में सत, रज व तम गुणों वाली प्रकृति को सृष्टि का मूल कारण बताया गया है। सृष्टि की रचना के समय परमात्मा इस सृष्टि में विक्षोभ उत्पन्न करते हैं। पहला विकार महतत्व व दूसरा अहंकार होता है। यह पूरी प्रक्रिया दर्शन आदि ग्रन्थों में देखी जा सकती है। सृष्टि को बनाने वाली सत्ता ज्ञानवान चेतन सत्ता ही होती है। यह समस्त ब्रह्माण्ड जिसमें असंख्य सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व अन्य लोक लोकान्तर आदि हैं, अपने आप नहीं बन सकते और न ही नियमों का पालन करते हुए सूर्य के चारों ओर, अपनी धुरी पर व उपग्रह ग्रह के चारों ओर गति कर सकते हैं। जिस सत्ता ने इस सृष्टि को बनाया है और जो इस सृष्टि को चला रहा है, उसी को परमात्मा व ईश्वर कहते हैं।

सृष्टि की रचना ज्ञानादि नियमों से हुई है अतः ईश्वर समस्त ज्ञान व शक्ति का भण्डार सिद्ध होता है। विशाल सृष्टि को देखकर ईश्वर सर्वव्यापक व आंखों से दिखाई न देने से सर्वातिसूक्ष्म व रंग आदि गुणों से रहित सिद्ध होता है। प्रश्न है कि वेदों की उत्पत्ति वा आविर्भाव कैसे व किससे हुआ? इसके साथ वेद क्या हैं, यह जानना आवश्यक है। वेद संस्कृत भाषा में तथा मन्त्र रूप में छन्दोबद्ध रचना का नाम है। वेद के सभी पद अर्थों से युक्त है। वेद का कोई भी पद रूढ़ नहीं अपितु धातुज, यौगिक वा योगरूढ़ हैं। वेदों के पदों के व्युत्पत्ति का ज्ञान पद में प्रयुक्त धातु से होता है और उसका अर्थ निघण्टु व निरुक्त की निर्वचन प्रणाली से किया जाता है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। संसार की अन्य भाषाओं में वैदिक संस्कृत भाषा के समान नियम व सिद्धान्त लागू नहीं होते क्योंकि अन्य सभी भाषाओं के पद रूढ़ होते हैं, धातुज या यौगिक नहीं होते। वेद मन्त्रों पर दृष्टि डालने व उनके अर्थों पर विचार करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि वेद मनुष्यकृत रचना नहीं है अपितु यह अपौरूषेय ग्रन्थ हैं। पौरूषेय या मनुष्यकृत रचना इस लिए नहीं है कि सृष्टि के आरम्भ में जो मनुष्य उत्पन्न हुए वह भी तो हमारी ही तरह के थे। बच्चा जब उत्पन्न होता है तो वह भाषा नहीं जानता। माता–पिता व आस पास के सगे सम्बन्धितयों से वह उनकी भाषा सीखता है। संस्कृत तो सर्वोत्कृष्ट भाषा है। वह मनुष्य रचित न होकर ईश्वर प्रदत्त है। अन्य सभी भाषायें संस्कृत का विकार हैं जो सृष्टि के आदि काल से निरन्तर होता आया है।

अब प्रश्न यह सामने आता है कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को किसने उत्पन्न किया और किसने उन्हें भाषा सिखाई व वेदों का ज्ञान कराया। इस प्रश्न पर वेदों के मर्मज्ञ ऋषि दयानन्द जी ने भी विचार किया था। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में यह सिद्ध किया है कि सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अमैथुनी सृष्टि की और मनुष्यों के रूप में युवावस्था में स्त्री व पुरूषों को उत्पन्न किया था। इन मनुष्यों में चार ऋषि वा पुरुष अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम के हुए। यह चारों मनुष्य ऋषि अर्थात् उच्च कोटि के विद्वान थे। यह पूर्वजन्म में पवित्र आत्मायें थी जिस कारण इनकी आत्माओं में ज्ञान ग्रहण करने की सर्वाधिक सामर्थ्य थी। सर्वव्यापक परमात्मा ने इन चार ऋषियों को अपना ज्ञान जिसे वेद के नाम से जानते हैं और आज भी वह सृष्टि के आदि काल जैसा ही शुद्ध रूप में उपलब्ध है, उसे इन चार ऋषियों की आत्माओं में स्थापित किया था। यह समझना आवश्यक है कि ईश्वर व जीवात्मा दोनों चेतन हैं। चेतन में ज्ञान प्राप्त करने व ज्ञान देने की क्षमता वा सामर्थ्य होती है। ईश्वर पहले से

ही, अनादि काल से, सृष्टि में ज्ञान व विज्ञान का अजस्र स्रोत है। उसने इस सृष्टि से पूर्व अनादि काल से अनन्त बार ऐसी ही सृष्टि को बनाया है व निर्धारित अवधि के बाद उसकी प्रलय भी की है। उसका ज्ञान का स्तर हमेशा एक समान रहता है। वह कभी कम व अधिक नहीं होता।

चारों वेद उसके ज्ञान में सदैव विद्यमान वा वर्तमान रहते हैं। ईश्वर सभी जीवात्माओं के भीतर व बाहर विद्यमान है। वह ईश्वर अपनी सामर्थ्य से ही इस समस्त सृष्टि सहित मनुष्यादि प्राणियों की भी रचना करता है। उसी ने हमारे शरीर में बुद्धि, मन व अन्तःकरण आदि अवयवों को बनाया है। उसने हमें बोलने के लिए न केवल जिह्वा वा वाक् दी है अपितु सुनने के लिए श्रवणेन्द्रिय भी दी है। ईश्वर को हमें जो भी बात कहनी व समझानी होती है उसकी वह हमारी आत्मा के भीतर प्रेरणा कर देता है जिसे मनुष्य जान व समझ सकता है। जिस मनुष्य का आत्मा जितना अधिक शुद्ध व पवित्र होता है उतनी ही शीघ्रता व पूर्णता से वह ईश्वर की प्रेरणा को ग्रहण कर सकता व समझ सकता है। ईश्वर ने अपने इस गुण व क्षमता का उपयोग कर सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा की आत्माओं में प्रेरणा कर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का ज्ञान उनके अर्थ सहित स्थापित किया था। शतपथ ब्राह्मण अति प्राचीन ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में इस विषय की चर्चा है। चार ऋषियों ने एक एक वेद का ज्ञान ईश्वर से प्राप्त कर उसका उपदेश ब्रह्मा जी नाम के अन्य ऋषि को किया। इससे ब्रह्मा जी को चारों वेदों का ज्ञान हुआ।

ब्रह्मा जी ने चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लिया तो उनका यह कर्तव्य था कि वह वेद ज्ञान से रहित आस पास के स्त्री व पुरुषों को वेदों का ज्ञान कराते। उन्होंने यह कार्य किया और उपदेश द्वारा सभी व अधिक से अधिक लोगों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाया। आदि सृष्टि में ईश्वर ने जो अमैथुनी सृष्टि की थी उसमें सभी पवित्र आत्माओं को उत्पन्न किया था जिनकी ज्ञान प्राप्त करने व उसे स्मरण रखने सहित शरीर की सामर्थ्य भी बहुत अधिक थी। वह मनुष्य जो सुनते थे वह उन्हें स्मरण रहता था। उनके शरीर भी स्वस्थ थे और हम अनुमान कर सकते हैं कि वह सब लम्बी आयु तक जीवित रहे थे। उन्होंने वेद ज्ञान प्राप्त कर अपने अनुरूप वर वधु निश्चित कर विवाह किये और कालान्तर में मैथुनी सृष्टि का होना आरम्भ हुआ। तब से यह जन्म–मरण व विवाह की परम्परा चल रही है और वेद ज्ञान भी परम्परा से चला आ रहा है। इस प्रकार से ईश्वर से चार ऋषियों की हृदय गुहा में स्थित जीवात्माओं को वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ और वेदोपदेश व वेदाध्ययन की परम्परा आरम्भ हुई जो महाभारत काल तक अबाधा रूप से चली। महाभारत काल व उसके बाद यह परम्परा बाधित हुई परन्तु ऋषि दयानन्द (1825–1883) ने आकर इसे पुनः प्रवृत्त किया। ऋषि दयानन्द के प्रयत्नों के कारण ही आज हमें चारों वेद अपने सत्यार्थ सहित संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में उपलब्ध हैं। यह वेदों के आविर्भाव की यथार्थ कथा है। वेदों में ईश्वर, जीव, प्रकृति सहित मनुष्यों के कर्तव्यों का विस्तृत ज्ञान है। वेदों की भाषा और ज्ञान की सहायता से मनुष्य अपना जीवन सुखी रखते हुए व उन्नति करते हुए व्यतीत कर सकता है। वेदों का अध्ययन कर मनुष्य यदि चाहें तो जीवन के सभी क्षेत्रों में ज्ञान व विज्ञान की उन्नति कर सकता है। हमारे ऋषि मुनि पर्यावरण प्रेमी थे। वह यज्ञ अग्निहोत्र करते हुए वेदाध्ययन एवं अनुसंधान कार्य करते थे और प्रकृति में प्रदुषण व विकार नहीं होने देना चाहते थे। जिस क्षेत्र में जो आवश्यक था वह आविष्कार उनके द्वारा किया गया। महाभारतकाल व उससे पूर्व का भारत ज्ञान विज्ञान की दृष्टि से उन्नत था। ऐसा वर्णन भी मिलता है कि प्राचीन भारत में निर्धन लोगों के पास भी अपने अपने विमान हुआ करते थे और वह देश व विश्व का भ्रमण करते थे। तीव्र गामी समुद्री नौकायें व यान भी होते थे जिनसे हमारे देश के लोग पाताल लोक व विश्व के अनेक भागों में जाते हैं। इन बातों की झलक ऋषि दयानन्द के पूना में दिए गये इतिहास विषयक प्रवचनों में मिलती है। वेदों को पढ़कर ही हमें अपने कर्तव्यों, जीवन के उद्देश्य व उसकी पूर्ति के साधनों का ज्ञान होता है। ऋषि दयानन्द ने अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर घोषणा की है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेद का पढ़ना पढ़ाना एवं सुनना–सुनाना सब मनुष्यों वा आर्यों का परम धर्म है। वेद हमें सही रीति से ईश्वरोपासना करना सिखाने के साथ वायु, जल व पर्यावरण आदि को शुद्ध करने की विधि यज्ञ अग्निहोत्र आदि का ज्ञान भी कराते हैं। सभी मनुष्यों को वेदाध्ययन कर अपना जीवन सुखी व सफल बनाना चाहिये और वेदों की रक्षा में योगदान देना चाहिये।

वेदों का आविर्भाव ईश्वर से हुआ है। ऐसा ईश्वर ने मनुष्यों के सभी कर्तव्यों का बोध कराने के लिए किया। संसार के सभी रीति रिवाजों व परम्पराओं पर वेदों का न्यूनाधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वेदों के अध्ययन व वेदों की शिक्षाओं पर आचरण कर हम धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य है। इति ओ३म् शम्

“आर्यसमाज के महाधन पं. लेखराम आर्य मुसाफिर”

–मनमोहन कुमार

आर्यसमाज का अस्तित्व वेद के अस्तित्व पर विद्यमान है। वेद के बाद ऋषि मुनियों के ग्रन्थ व उनकी ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित मानव जीवन के सभी पक्षों पर मार्गदर्शन करने वाली सत्य मान्यताओं पर है। यदि किसी को शास्त्र वा शास्त्र ज्ञान उपलब्ध न हो तो उसे तर्क व युक्ति का सहारा लेकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिये और विधर्मियों से वैदिक धर्म की रक्षा करनी चाहिये। यह विचार ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना के समय प्रचलित किये जिसका आचरण आर्यसमाज के विद्वान व सभी अनुयायी स्थापना काल से करते चले आ रहे हैं। ऋषि दयानन्द जी के जीवन काल में स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय जी आदि महापुरुष ऋषि वा उनकी विचारधारा के सम्पर्क में आये और उन्होंने अपने विवेक से आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार प्रसार हेतु पूर्ण समर्पित भाव से काम किया। इसके बाद अनेक ज्ञात व अज्ञात विद्वान, पुरुष व स्त्रियां इससे जुड़ते रहे जिन्होंने न केवल आर्यसमाज की विचारधारा को अपनाया अपितु इसके आचरण व व्यवहार करने में अनेक प्रकार के कष्ट भी सहन किये। जिन लोगों ने आर्यसमाज को सर्वात्मा अपनाया और इसका प्रचार प्रसार किया उन्हें हम आर्यसमाज के महाधन नाम से सम्बोधित कर सकते हैं। आज यदि आर्यसमाज का अस्तित्व है और वह अपने स्वर्णिम इतिहास को समेटे हुए आगे बढ़ रहा है तो इसमें आर्यसमाज के महाधन वा बलिदानी प्रकृति के ऋषि भक्त विद्वानों का ही मुख्य योगदान है।

इस लेख में हम आर्यसमाज के महाधन पं. लेखराम जी के विषय में कुछ जानकारी दे रहे हैं। पं. लेखराम जी का जीवन आदर्श जीवन है जो सभी आर्यसमाज के विद्वानों, नेताओं एवं ऋषि भक्तों के लिए प्रेरणादायक है। उनके जीवन में आरम्भ से अन्त किसी प्रकार का कोई दाग व धर्म विरुद्ध आचरण नहीं है। उन्होंने अपने जीवन का एक एक पल वैदिक धर्म के प्रचार व उन्नति के लिए जीया। प्राणों की उन्होंने चिन्ता नहीं की। कहीं भी धर्मान्तरण की सूचना मिलती थी तो वह तत्काल वहां पहुंच कर लोगों को समझाते थे और जो लोग ईसाई व इस्लाम धर्म को किन्हीं भी कारणों से स्वीकार कर रहे होते थे, उन्हें इन मतों की यथार्थ स्थिति अर्थात् कमियां बताकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठताओं का प्रतिपादन करते थे। यह भी वेदमत अनुयायियों का सौभाग्य है कि पडित लेखराम जी के लिखे कुछ ग्रन्थ सुलभ हैं। आर्य विद्वान पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी पं. लेखराम जी के ग्रन्थों के संकलन ‘कुलियात आर्य मुसाफिर’ का सम्पादन कर रहे हैं। इसका पहला भाग आगामी कुछ ही दिनों में प्रकाशित होने वाला है। इससे पूर्व स्वामी ओमानन्द जी ने गुरुकुल झज्जर से तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस वृहद ग्रन्थ का प्रकाशन किया है।

पं. लेखराम जी ने अजमेर में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे। ऋषि के दर्शन कर आप तृप्त व आनन्दित हुए थे। आपने ऋषि से कुछ प्रश्न किये। एक प्रश्न था कि आकाश और ब्रह्म दोनों व्यापक हैं। दोनों व्यापक सत्तायें एक स्थान पर एक साथ कैसे रह सकती हैं? ऋषि दयानन्द ने इस प्रश्न को समझाने के लिए भूमि से एक पत्थर उठाया और पं. लेखराम जी को दिखाकर कहा कि देखो इसमें अग्नि व परमात्मा व्यापक हैं या नहीं? इसका उत्तर हां में था। उन्होंने कहा कि बात वास्तव में यह है कि जो वस्तु जिससे सूक्ष्म होती है वह उसी वस्तुत में व्यापक हो सकती है। ऋषि का यह समाधान सुनकर पं. लेखराम जी को बहुत आनन्द हुआ। पं. लेखराम जी ने ऋषि से एक प्रश्न यह पूछा कि जीव और ब्रह्म की भिन्नता अर्थात् पृथक पृथक अस्तित्व का कोई प्रमाण बतायें। इसका उत्तर देते हुए ऋषि ने उन्हें कहा कि यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव और ब्रह्म का भेद बताता है। पं. लेखराम जी ने ऋषि से पूछा कि अन्य मतों के लोगों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में सम्मिलित करना चाहिये वा नहीं? इसका उत्तर ऋषि ने यह दिया कि अवश्य शुद्ध करना चाहिये। एक प्रश्न पंडित जी का यह भी था कि बिजली क्या वस्तु है और यह

कैसे उत्पन्न होती है? ऋषि दयानन्द ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि विद्युत सभी स्थानों में है और रगड़ अर्थात् घर्षण से उत्पन्न होती है। बादलों की विद्युत् भी बादल और वायु के घर्षण से उत्पन्न होती है। इन प्रश्नों के अतिरिक्त भी पं. लेखराम जी ने कुछ और प्रश्न किये थे परन्तु वह प्रश्न व उनके उत्तर उन्हें स्मरण नहीं रहे। ऋषि दयानन्द जी ने पं. लेखराम जी को यह सलाह भी दी थी कि २५ वर्ष की आयु से पूर्व विवाह मत करना। लेखराम जी ने इस आज्ञा का पालन किया और ३५ वर्ष की आयु में २६ वर्षीय लक्ष्मी देवी जी से विवाह किया था। लक्ष्मी देवी जी अपढ़ महिला थी। पं. लेखराम जी ने उन्हें स्वयं पढ़ाकर शिक्षित भी किया।

पंडित लेखराम जी पुलिस विभाग में नौकरी करते थे। नौकरी करने से वेद प्रचार में बाधायें आती थीं। अतः आपने २४ दिसम्बर, १८८४ को नौकरी से त्याग पत्र दे दिया था। त्यागपत्र देने के बाद वह नौकरी के सभी बन्धनों से मुक्त हो गये। अधिकारियों की गीदड़ भभकी पर भी अब पूर्ण विराम लग गया था जो सेवाकाल में उन्हें मिला करती थी। अब आप वैदिक धर्म प्रचार, धमान्तरितों की शुद्धि व धर्म रक्षा के कार्यों के लिए जब जहां जाना चाहें, आ जा सकते थे।

पं. लेखराम जी ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि उन्होंने देश भर में घूम कर ऋषि दयानन्द जी की जीवन विषयक सामग्री संग्रहीत की। कई वर्षों तक वह इस कार्य के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते जाते रहे। इस कार्य को करने में उन्हें कितने कष्ट सहन करने पड़े, इसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते। इस कार्य में उन्हें सफलता मिली और प्रभूत सामग्री एकत्र हो गई। इस सामग्री के आधार पर उन्होंने ऋषि दयानन्द का प्रथम विशालकाय जीवन चरित्र लिखा। डा. भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के संस्थापक लाला दीपचन्द आर्य जी द्वारा प्रकाशित यह जीवन चरित्र भी ऋषि साहित्य के ही समान आर्यसमाज का महाधन है। बाद के सभी जीवनीकारों ने इसी जीवन चरित्र की सहायता से अपने जीवन चरित्र लिखे हैं। इस जीवन चरित्र की शैली भी अद्भुद है। पं. लेखराम जी स्थान-स्थान पर जाकर उन लोगों से मिलते थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द जी को साक्षात् देखा था और उनके विचारों वा व्याख्यानों को सुना था। कुछ ने उनकी संगति में भी समय व्यतीत किया था। लेखराम जी ने उन व्यक्तियों से मिलकर ऋषि दयानन्द विषयक उनकी स्मृतियों को लेखबद्ध कराया और उन्हें यथावत् अपने जीवन चरित में स्थान दिया। यह बृहद जीवन चरित पढ़ते हुए ही आरम्भ से अन्त तक पाठक का मन ऋषि दयानन्द और लेखराम जी के प्रति श्रद्धा से भरा रहता है। हमारा सौभाग्य है कि हमने इसे आद्योपान्त पढ़ा है और इसे पढ़कर हमें सन्तोष व सुख की अनुभूति हुई। इसी जीवन चरित्र को लिखते हुए ही एक विधर्मी ने उनके पेट में छुरा भोंक कर उनकी हत्या कर दी थी। इस बलिदान के कारण पंडित जी को रक्तसाक्षी धर्मवीर पं. लेखराम के गौरवपूर्ण नाम से सम्बोधित किया जाता है।

पं. लेखराम जी का जन्म विक्रमी संवत् १९१५ की चौत्र मास में ८ तारीख को हुआ था। अंग्रेजी वर्ष सन् १८५६ का था। आपका जन्म स्थान रावलपिण्डी का सैयदपुर ग्राम है। आपने मदरसे से उर्दू व फारसी की शिक्षा प्राप्त की। २१ दिसम्बर, सन् १८७५ को आप पुलिस में नौकरी पर लगे थे। आपने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर उनके अनुयायी बने थे। सन् १८८१ में आपने पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। आपने पेशावर आर्यसमाज की ओर से 'धर्मोपदेशक' नामक मासिक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया। यह सब करते हुए आप पेशावर में आर्यसमाज के सत्संगों में व्याख्यान भी देते थे। यह व्याख्यान आप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के आधार पर किया करते थे। एक बार आप अपने व्याख्यान में शराब का खण्डन कर रहे थे। वहां एक सेना का कप्तान उपस्थित था। उस पर आपके व्याख्यान का ऐसा प्रभाव पड़ा की उसने मदिरापान छोड़ दिया। पं. लेखराम जी व्याखान देने के साथ शास्त्रार्थ में भी रूचि रखते थे। पंडित जी की भावना थी कि अखिल विश्व में ओ३म् का झण्डा फहराये और सारा संसार वैदिक धर्मी हो जाये। जिन दिनों पण्डित लेखराम जी पेशावर में थे, उन दिनों इनके पास ऋषि दयानन्द के दो पत्र आये। एक में पंडित जी को गोरक्षा आन्दोलन चलाने और गोहत्या बन्द करने वाले मेमोरेण्डम पर हस्ताक्षर कराने के बारे में था और दूसरा हिन्दी का प्रचार करने के विषय में था। पण्डित जी ने ऋषि की आज्ञा के अनुरूप उत्साह से दोनों कार्यों को किया। आर्य

हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए आपने पूरे मन, वचन व कर्म से कार्य किया। आपने विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये, धर्म पिपासुओं को व्याख्यान दिये और इसके साथ ही धर्मान्तरित किये जाने वाले हिन्दुओं को उनके गांव व स्थानों पर जाकर समझाते थे। ईसाई व इस्लाम मत का प्रमाणों व युक्तियों से आप खण्डन भी करते थे।

आपकी वैदिक धर्म के प्रति लगन व धर्म प्रचार की भावना सहित आपके प्रभावशाली व्याख्यान व तर्कों को सुनकर लोग वैदिक धर्म में बने रहने के लिए सहमत होते थे। पंडित जी की विदेश जाकर भी प्रचार करने की इच्छा थी। आप अरब देश में जाकर भी प्रचार करना चाहते थे। आपने सन् १८६१ में स्वामी श्रद्धानन्द जी के सहयोग से कुम्भ के मेले में प्रचार करने सहित उसके लिए प्रभूत चन्दा भी संग्रहित किया था। वर्तमान में पाकिस्तान के सिन्ध क्षेत्र में जाकर भी आपने प्रचार किया था और वहां ईसाई व मुसलमान बन रहे हिन्दुओं को वैदिक धर्म की महत्ता समझाकर उन्हें वैदिक धर्म के पालन में स्थिर किया था। लोगों को वैदिक धर्म में स्थिर रखने में आपने अनेक अवसरों पर सफलतायें प्राप्त की थीं। ऐसे भी अवसर आये कि पूरा गांव ईसाई मत स्वीकार कर रहा है परन्तु पंडित जी के वहां पहुंचने और लोगों को समझाने का प्रभाव यह हुआ कि वहां लोंगों ने अपना इरादा बदल दिया। पंडित जी ने राजपूताने और काठियावाड़ में भी धर्म प्रचार किया था। पंजाब में उन दिनों हिन्दुओं में मासाहार की बुराई विद्यमान थी। पंडित जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अनुरोध पर मांसाहार के विरोध में अनेक स्थानों पर जाकर व्याख्यान दिये और मांस भक्षण को वेद-विरुद्ध सिद्ध करने के साथ युक्तियों से इसे महापाप सिद्ध किया। एक बार आप स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ पाकिस्तान के क्वेटा स्थान पर आर्यसमाज के उत्सव में आये थे। तब यहां आपके अनेक विषयों पर १३ व्याख्यान हुए थे। यहां से बिलोचिस्तान के अनेक स्थानों पर जाकर भी आपने प्रचार किया था। आपने एक स्थान सीबी पर दो मुसलमानों को भी वैदिक धर्म की श्रेष्ठता समझाकर शुद्ध किया और उन्हें वैदिक धर्मी बनाया। आपने भारत को आर्य बनाने की समस्या पर विचार कर इसके लिए सात उपाय सुझाये थे। सातवां उपाय था कि दान की ठीक-ठीक व्यवस्था की जाये। दान के धन को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट न किया जाये। आपने धर्म प्रचार कर सियालकोट में सैकड़ों सिखों को मुसलमान होने से भी बचाया था।

पंडित लेखराम जी ने अपने नाम के 'लेख' शब्द के अनुरूप लेखन का कार्य भी किया। आपने छोटी-बड़ी लगभग ३३ पुस्तकें लिखी हैं। सन् १८६७ में लाहौर में एक मुस्लिम युवक आपके निवास पर धर्मान्तरण की इच्छा से आया। वह रात दिन आपके साथ रहने लगा। ६ मार्च को पंडित जी ने ऋषि जीवन का लेखन का कार्य किया। काम से थककर वह खड़े हुए और अंगडाई ली। इस मुसलिम युवक ने कम्बल ओढ़ रखा था और उसमें खंजर छिपा रखा था। उसने हाथ से खंजर निकाला और पंडित जी के पेट में घोप कर उसे धूमा दिया। इससे पेट में कई घाव हो गये। आंते कट कर बाहर को आ रही थी। पंडित जी ने एक हाथ से अंतड़ियों को अन्दर किया और दूसरे हाथ से कातिल को पकड़ लिया। कुछ क्षण में कातिल ने अपने आप को छुड़ा लिया और भाग गया। घायलावस्था में आपको लाहौर के अस्पताल ले जाया गया। इस अवसर पर आपके परम मित्र महात्मा मुंशीराम जी जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए, आपके पास बैठे थे। आप घटना के बाद से निरन्तर ओ३म् विश्वानि देव और गायत्री मंत्र का पाठ कर रहे थे। रात्रि २ बजे आपने प्राण त्याग दिये। इस प्रकार ऋषि दयानन्द का एक परम भक्त वैदिक धर्म की वेदि पर बलिदान हो गया।

पंडित जी ने ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलकर वैदिक धर्म की प्रशंसनीय सेवा की। पं. लेखराम जी के बलिदान ने सिद्ध कर दिया कि वैदिकधर्म के विरोधियों के पास आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मान्यताओं व आक्षेपों का समुचित उत्तर नहीं है। वैदिक धर्म और आर्यसमाज वस्तुतः दिग्विजयी विचारधारा है और इसके अनुयायी अपना रक्त व प्राण देकर भी इसकी रक्षा करते हैं। हम आर्यसमाज के महाधान पंडित लेखराम जी को अपने हृदय से नमन करते हैं और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

भूल सुधार

दिनांक १८ अप्रैल २०१८ के आर्य जीवन अंक में २ लेख छपे है जिनका शीर्षक
१) हमें अभावों में जीना, सीखना चाहिए
२) मितव्ययता अनेकों दुर्गुणों से बचाती है
गलती से लेखक का नाम गलत छपा है। उपरोक्त दोनों लेखों के लेखक का नाम खुशाल चन्द्र आर्य है। इस भूल के लिए खेद है।

ఆర్య సమాజ చరిత్రలో తొలిసారి

అంతర్జాతీయ గురుకుల మహా సమ్మేళనము

2018 జూలై 6, 7, 8 తేదీలలో

వేదిక : కాంగ్డీ గురుకులము - హరిద్వార్

(విద్యాలయ విభాగ ప్రాంగణము)

ఆర్య మహాశయులారా !

సమస్త విశ్వ ఆర్య సమాజాల సర్వోన్నత సంఘము సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యమున అంతర్జాతీయ గురుకులాల మహా సమ్మేళనము 2018 జూలై 6, 7, 8 తేదీలలో కాంగ్డీ గురుకులము హరిద్వార్ (ఉత్తరాఖండ్) ప్రాంగణములో నిర్వహింపబడుచున్నది. సమస్త గురుకులాల - అంతర్జాతీయ మహా సమ్మేళన నిర్వహణ, ఆర్య సమాజ చరిత్రలోనే మొదటిది. తామెల్లరు అధికాధిక సంఖ్యలో హరిద్వార్ చేరుకొని ఈ మహాసమ్మేళనము యొక్క చారిత్రక కార్యక్రమాలలో మీరు సాక్షులుగా పాల్గొంటారని ప్రార్థిస్తున్నాము.

సమ్మేళన కార్యక్రమాల ముఖ్య ఆకర్షణలు

1. దేశ-విదేశాల గురుకులాలలో విద్యను అభ్యసించే విద్యార్థినీ - విద్యార్థుల ఆగమనము.
2. విద్యార్థినీ-విద్యార్థులచే ఆకర్షణీయ-అద్భుత కార్యక్రమాల ప్రదర్శన.
3. సందేశాలు, ఉపదేశాలు, ఉపన్యాసాలు - పాల్గొను మహానుభావులు :- సుప్రసిద్ధ ఆర్య సన్యాసులు, వైదిక విద్వాంసులు, ఆచార్యులు, మహిళా - ఆచార్యులు, ఆర్య సమాజ నాయకులు మరియు రాజకీయనాయకులు.
4. సస్వర వేదపఠనము, కంఠస్థ వేద-వేదాంగాలు, అష్టాధ్యాయి తదితర అంశాల ప్రస్తుతీకరణ.
5. ప్రతిభా పాటవాలతో కూడిన - సంస్కృత సంభాషణ, నాటిక తదితర అంశాల ప్రదర్శన.
6. గురుకులాల చరిత్ర - గొప్ప ప్రదర్శన
7. ఆర్ష విద్యా విధానాన్ని వైకల్పిక విద్యా విధానంగా ప్రకటించాలనే - ప్రస్తావన.
8. అన్ని గురుకులాలలో ఒకే విధమైన పాఠ్యక్రమము మరియు బోధనా పద్ధతులను అనుసరించాలనే యోచన.
9. ఆర్ష విద్యా విధానాన్ని మరింత ప్రభావవంతముగా మలిచేందుకు ప్రణాళికను రూపొందించుట.

ఈ సమ్మేళనాన్ని జయప్రదంగాంచేందుకు తామెల్లరూ
అధికాధిక సంఖ్యలో పాల్గొనాలనీ,
తమ తన-మనో ధనంబుల చేత సహకరించాలనీ ప్రార్థిస్తున్నాము.

నిర్వాహకులు

సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ

"మహర్షి దయానంద భవనము"
3/5 ఆసఫ్ అలీ రోడ్డు, క్రొత్త ఢిల్లీ - 110002.
Phone: 011-23274771, 23280985, E: mail: sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

जमाने को बदलना है

पांच

मजूर आ ! किसान आ !
वतन के नवजवान आ !
तुझे सितम की सरहदों के पार अब निकलना है
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है!
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !
यहाँ पे मुद्दतों से आदमी ने है अश्क पिया
रहम करेंगे-लोग इस उम्मीद पर बहुत जिया
मगर सवाल पेट का बिना जवाब के रहा
किसी ने कुछ नहीं सुना, किसी ने कुछ नहीं कहा
तो उसने सर उठा लिया
नया बिगुल बजा दिया
उसी बिगुल की धुन में तेरे सुर को आज ढलना है !
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है !
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !
ये आदमी की शक्ल में भटकते लोग कौन हैं ?
कध्दम-कध्दम से खौफ से अटकते लोग कौन हैं ?
न जिनके बाग में उम्मीद की कोई कली खिली !
अँधेरा पी के मर गए मगर न रोशनी मिली !
उन्हीं का खध्वाब तू भी है
पसीना और लहू भी है
उन्हीं की यादगार का चिराग बन के जलना है !
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है !
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !
ये जिनकी साँस-साँस में तड़प रही हैं बिजलियाँ
उन्हीं को मिल रही हैं रोज लाख-लाख धमकियाँ
यश डर है उनले लब पे भूख का सवाल आए ना
कि उनकी धमनियों में खध्न का उबाल आए ना
कहीं जबाँ न खोल दें
ये सच कहीं न बोल दें
हुकुमतों की खैर-खध्वाहियत को यों ही पलना है !
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है !
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !
सुबह की रोशनी से जिसने इनको काट रक्खा है
दिलों की वादियों को साजिशों से बाँट रक्खा है
सड़क पे खींच ला कि अब उसे सबक सिखा दे तू
वतन परस्त ! इंकलाब करके अब दिखा दे तू
यश सच है इस श्जनूनश से
शहीद ! तेरे खून से

मेरी तकदीर में एक भी गम न होता,
अगर तकदीर लिखने का हक
मेरी माँ को होता।

समन्दरे-निजाम को उबलना है ! उबलना है !
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है !
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !
जमीं के पूत से जमीन छिन ली गई यहाँ
जला उसी का घर, पड़ी उसी के पाँव बेड़ियाँ
हुकध्क मिल सके नहीं कभी अमन के रास्ते
कभी नहीं रही जमीन कायरों के वास्ते
श्लहू-लहूश के राग में
जवाँ दिलों की आग में
हर इक चटाने-जुल्म को पिघलना है ! पिघलना है !
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है !
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !
बहे अगर खध्लिाफ तो हवा का रुखध बदल दे तू
जो साँप फन उठाते हैं तो उनका फन कुचल दे तू
जो हाथ तेरे हाथ से जुदा हैं उनको काट दे
जरूरतन जमीं को सरों से दोस्त पाट दे
तुझी को यह भी करना है !
कि खुध्द ब खुध्द उबरना है !
बहुत गिरा है तू कि अब सम्हलना है ! सम्हलना है !
यश राह पुरखतर है पर इसी पे तुझको चलना है !
जमाने को बदलना है !
जमाने को बदलना है !

ప్రజ్ఞాచక్షువు విరజానందుని కథ

ప్రజ్ఞాచక్షువు విరజానంద స్వామిగారు క్రీ.శ. 1778వ సంవత్సరంలో జలంధర్‌లోని కర్తార్‌పూర్ అనే గ్రామంలో జన్మించారు. వీరి తల్లిదండ్రులు భరద్వాజ గోత్రీయ సద్బ్రాహ్మణులు. తండ్రి పండిత నారాయణదత్త భరద్వాజగారు సుప్రసిద్ధ సంస్కృత పండితులు కావటంవల్ల వారి ప్రాథమిక విద్య సంస్కృతంతోనే ప్రారంభమయ్యింది. కాని, దురదృష్టవశాత్తు వీరు చిన్ననాటనే తీవ్రమైన మశూచివ్యాధికి గురియై కంటిచూపును కోల్పోయారు. అనతికాలంలోనే తల్లిదండ్రులు దివంగతు లయ్యారు. అన్నా వదినల ఆదరాభిమానాలునూ ఆయనకు లభించలేదు. దానితో ఆ బాలుడు విరక్తి చెంది యిల్లు వదలి దేశ సంచారయ్యాడు. మూడేండ్ల తదుపరి ఎట్లో ఋషీకేశం చేరుకున్నాడు.

స్వామి విరజానందుని పూర్వనామమేదియో మనకు తెలియదు. ఋషీకేశంలో అతడు కందమూల ఫలాలు తింటూ మూడేండ్లు దాపసిక జీవనం గడిపాడు. ప్రతిదినము గంగానదిలో నిలబడి గంటల కొలది గాయత్రీజపం చేశాడు. భిక్షకొరకు బయటకు వెళ్ళేవాడు కాదు. భక్తులెవరైనా వారంతట వారుగా ఏమైనా పెడితే తినేవాడు, లేకున్న పస్తులుండేవాడు. ఈ కఠోరమైన తపస్సుతో, గయత్రీజపంతో వారిలో ప్రజ్ఞా చక్షువు ప్రకటమయ్యింది. ఏకసంధాగ్రాహి కావటమే కాక అతడు శాస్త్రీయ విషయాలను వివేచించగల వివేకి అయ్యాడు. వీటికి తోడు సుప్రసిద్ధ సంస్కృత విద్వాంసులైన స్వామీ పూర్ణానంద సరస్వతులవారి అనుగ్రహం అతనికి లభించింది. వీరే ఆ బాలుని వైరాగ్యాన్ని సమగ్రంగా పరీక్షించి సంన్యాసదీక్ష నిచ్చి విరజానంద సరస్వతి యని పేరు పెట్టారు. పూర్ణానంద స్వాములవారు విరజానందులచే పాణినీయ అష్టాధ్యాయిని కంఠస్థం చేయించి ప్రతీ సూత్రానికి భాష్యం చెప్పారు.

ప్రాచీన ఋషులననుసరించిన వేదార్థ ప్రక్రియను తెలిపి ఆర్షగ్రంథాలపట్ల అమితమైన శ్రద్ధను కలిగించారు. దేశభక్తిని, స్వాభిమానాన్ని కలిగించారు. దానితో ప్రజ్ఞాచక్షువయ్యారు. వ్యాకరణ భాస్కరుడయ్యారు. నిత్యం నిష్ఠతో చేసిన గాయత్రీజపమే వారి కంతటి యోగ్యతను ప్రసాదించింది.

గాయత్రీజపం బుద్ధిని వికసింప జేయుటవేగాక ఏకాగ్రవరున్తుంది. ఏకసంధాగ్రాహిని చేస్తుంది. అద్భుతమైన ధారణాశక్తిని ప్రసాదిస్తుంది. స్వామి విరజానందుని ధారణాశక్తి ఎంత గొప్పదంటే–

అది ఆంగ్లేయుల పాలనా కాలం. ఒక దినం స్వామి విరజానందులు గంగానదిలో నిలబడి దీర్ఘకాలం జపం చేసుకొని తిరిగి వస్తూండగా యిద్దరు ఆంగ్లేయాధికారులు ఆంగ్లంలో వాదించుకుంటూ ఉండటం గమనించారు. పరిణామం ఏమౌతుందోనని వారు అక్కడే నిలబడి గమనించసాగారు. ఆంగ్లేయాధికారుల వాదనలు క్రమంగా తిట్టుకోవటం కొట్టుకోవటం వరకు వెళ్ళాయి. ఇద్దరకు పెద్ద పెద్ద గాయాలే అయ్యాయి. వారి అరుపులకు, కేకలకు దూరంగా గుడారాలలో ఉన్న ఉన్నతాధికారులు వచ్చారు. ఇద్దరిని విడతీశారు. ఏమయ్యిందని అక్కడ నిలబడి ఉన్న విరజానందస్వామిని ఆంగ్లంలో ప్రశ్నించారు. దానికి వారు "నాకు ఆంగ్లం రాదు. దయచేసి హిందీలో అడగం"దని అన్నారు. అంతట ఉన్నతాధికారులు – 'బాబా ! మీ రిక్కడే నిలుచున్నారు కదా ! వీళ్ళిద్దరు ఏమని తిట్టుకున్నారు ? ఎందుకు కొట్లాడుకున్నారు ? అసలు ఏమి జరిగింది ? మీరు చెప్పాలి" అన్నారు.

అందుకు ఆ అంధ మహాశయుడు – "అయ్యాలారా ! ఏం జరిగిందో చెప్పడానికి నేను చూడలేను. కనుక చెప్పలేను. కానీ, వీళ్ళు ఏమి మాట్లాడుకున్నది నాకు జ్ఞాపకం ఉంది. నాకు ఆంగ్లభాష రాదుకనుక ఆ మాటల అర్థాలు నాకు తెలియవు. వాళ్ళెలా మాట్లాడుకున్నారో అలా మాట్లాడి వినిపిస్తాను. మీరే అర్థం చేసుకోండన్నారు. 'సరే' నన్నారు అధికారులు. అంతట విరజానంద స్వామి అద్భుతమైన రీతిలో సరిగా ఆంగ్లేయులు ఉచ్చరించినట్లుగానే ఆంగ్లపదాల నుచ్చరిస్తూ వాళ్ళెలా మాటలు ప్రారంభించి చివరకు తిట్టుకోవడం కొట్టుకోవడం వరకు జరిగాయో తు.చ. తప్పకుండా మాట్లాడి వినిపించారు. అది విని ఆంగ్లేయాధికారులు జరిగిన సంగతి తెలుసుకొని వారిద్దరినీ తీసుకువెళ్ళి తగిన విధంగా దండించారు.

ఆ అద్భుతమైన సంఘటన ఆ నోటా ఈ నోటా సమీపంలో బసచేసిన అల్వర్ మహారాజుగారి చెవివరకు వెళ్ళింది. ఒకతను మహారాజుగారిని సమీపించి – 'మహారాజా ! మన మజిలీకి దగ్గరలోనే ఒక అద్భుతం జరిగింది. ఆంగ్లభా, ఎంతమాత్రం రాని ఒక అంధ సాధువు ఇద్దరు ఆంగ్లేయులు వాదోపవాదాలు చేసి కోట్లాడుకున్న సంఘటనంతా యథాతథంగా మాట్లాడి వినిపించాడు. అతని అద్భుతమైన జ్ఞాపకశక్తిని చూసి అందరూ ఆశ్చర్యపోయారు. ఇంతేగాక, అతడు సంస్కృతంలో అనర్గళంగా మాట్లాడుతున్నా"దని చెప్పారు. ఇది విన్న అల్వర్‌రాజు పరుగెత్తుకుంటూవచ్చి స్వామిని చూశాడు. అతని శరీరం బలహీనంగా బక్కపలుచగా ఉన్నా అతడు బ్రహ్మవర్చస్సుతో దేదీప్యమానంగా కనబడ్డాడు. అల్వర్‌రాజుకు అతనిపై శ్రద్ధ కలిగింది. చేతులు జోడించి 'మహాత్మా ! మీరు నాకు గురువులు కందని ప్రాధేయపడ్డాడు. ఒక షరతు మీద విరజానంద స్వామీజీ అంగీకరించారు.

ఆ షరతు ఏమంటే – 'ప్రతి దినం రాజు తన రాచకార్యాల నన్నిటినీ సర్దుబాటు చేసుకొని రెండుగంటలు స్వామీజీ వద్ద సంస్కృతం, ఆర్ష సాహిత్యం చదువుకోవాలి. నిత్యం నియమంగా ప్రాతః సాయం సంధ్యలలో గాయత్రీ జపం చెయ్యాలి". స్వామీజీ మరికొంత వివరిస్తూ – 'నేను నీకు ముందుగా ఉదేశించేది గాయత్రీనే. గాయత్రీజపం ఏమంత కఠినమైనది కాదు. నీవు చేయగలవు. అందరూ చేయగలరు. నా వద్ద ఉన్నది ఆ గాయత్రీ శక్తినే. నీవు కూడా సాధన చెయ్యి. నీకు కూడా అది లభిస్తుం' దన్నారు.

అనంతరం స్వామీజీ అల్వర్ రాజ్యానికి వెళ్ళి అక్కడ కొంతకాలం ఉండటం, రాజు

నియమంగా వారివద్ద విద్య నభ్యసించటం జరిగాయి. ఒక దినం రాజు వినోద కార్యక్రమంలో నిగ్నమై స్వామీజీ వద్దకు పాఠానికి వెళ్ళలేదు. దానితో స్వామీజీ క్రోధితుడై ఆ రాజ్యాన్ని వదిలిపెట్టి వెళ్ళిపోయారు. స్వామీజీది చాలా ఉగ్రస్వభావం. అనార్ష గ్రంథాలను, అలసత్వాన్ని ఆయన సహించే వారు కాదు. తన వద్దకు ఎవరైనా విద్య నభ్యసించటానికి వస్తే ముందుగా అతనివద్ద ఉన్న అనార్ష గ్రంథాలన్నిటినీ నదిలో పడవేసి రమ్మనేవారు. ఆ చదువంతా మరిచిపొమ్మని చెప్పేవారు. తరువాతనే అతనిచే పాణినీ వ్యాకరణం చదివించి ఆర్షగ్రంథాలను చదివించేవారు. తనవద్ద విద్యనభ్యసించవచ్చిన దయానంద స్వామివట్లకూడా ఆయన అట్లే వ్యవహరించారు. ఆర్షగ్రంథా లంటే ఋషులు వ్రాసిన గ్రంథాలు. ఎవరైతే శిక్షా కల్ప వ్యాకరణ నిరుక్త ఛందో జ్యోతిషా లనే షడంగాలను అధ్యయనం చేస్తారో, ఆ అధ్యయనంతో పాటు తాపసిక జీవనం గడుపుతూ యోగసాధనచేసి నిర్వికల్ప సమాధి స్థితిని పొందుతారో వారిని ఋషులంటారు. అట్టివారు వ్యాకరణం ద్వారా వేదార్థాన్ని గ్రహించటమేకాక సమాధిస్థులై దానిని సాక్షాత్కారం చేసుకోగలరు. అట్టివారి రచనలలో భ్రమ ప్రమాదములుండవు. విషయాన్ని సంక్షిప్తంగా సూటిగా చెబుతారు. అవి యుక్తికి, అనుభవానికి, విజ్ఞానానికి అనుకూలంగా ఉంటాయి. బ్రాహ్మణ ఆరణ్యకాలు, ఉపవేదాలు ఉపనిషత్తులు వేదాంగాలు షడ్దర్శనాలు స్మృతులు మొదలైనవి యీ వర్గానికి చెందుతాయి. ముఖ్యంగా యివి ఈశ్వరీయజ్ఞానమైన వేదాలకు అనుకూలంగా ఉంటాయి. ఇట్టివాటినే ఆర్షగ్రంథా లంటారు. వీటికి భిన్నమైనవన్నీ అనార్షగ్రంథాలు. వాటిలో కొంత సత్యమున్నా వాటిని మనం విసర్జించాలి. వదలిపెట్టాలి. లేకుంటే వాటిలోని అజ్ఞానం మనలో తిష్ఠవేసుకునే ప్రమాదముంది. మూఢనమ్మకాలే తొందరగా వ్యాపిస్తాయి కదా !

గురు విరజానందులవారి వద్ద విద్యనభ్యసించిన తదుపరియే మహర్షి దయానందులవారికి సత్య అవగతమయ్యింది. అనేక సందేహాలకు సమాధానాలు లభించాయి. వేదార్థం బోధపడింది. షడ్దర్శనాల సమన్వయం సాక్షాత్కారమయ్యింది. ఏకాంతానికి వెళ్ళి తానొక్కని ఉన్నతికే తపస్సు చేసేకన్నా అందరి ఉన్నతికొరకు తపిస్తూ జీవించాలనే ప్రేరణ కలిగింది. సంకట స్థితిలోనున్న దేశాన్ని, ధర్మాన్ని రక్షించటం కోసం తన సర్వస్వాన్ని అర్పించటానికి సంసిద్ధుడయ్యింది గురు విరజానందుని బోధనల వల్లనే.

గురు విరజానందస్వామి కంతటి బోధనా పటిమ, ధారణా శక్తి, వివేకజ్ఞానం వారు నియమంగా నిష్ఠగా చేసిన గాయత్రీజపం వల్లనే కలిగాయి.

ప్రతిభా బుద్ధి

గాయత్రీ జపంవల్ల కలిగే మరొక ఉన్నత ఉపలబ్ధి ప్రతిభాబుద్ధి. ప్రతిభావంతులు తాము జ్ఞానవంతులు కావటమేకాక ప్రజలను జ్ఞానవంతుల చేయగలరు. ప్రభావితుల చేయగలరు. లోకంలోని అవిద్యను అజ్ఞానాన్ని పారద్రోలి జ్ఞానజ్యోతిని వెలిగించగలరు. వీరివల్ల లోకానికి చాలామేలు కలుగుతుంది. ఆదిశంకరులు, మహర్షి దయానందులు మొదలైనవారు ఇట్టి కోవకు చెందుతారు. వీరిరువురు గాయత్రిని జపించినవారే.

ఈ సందర్భంలో ఆదిశంకరులలోని ప్రతిభాశక్తిని సంక్షిప్తంగా తెలిసికొందాము.

ఆదిశంకరులు

జగద్గురువులుగా ప్రసిద్ధి చెందిన ఆదిశంకరులు సుమారు 2,400 సంవత్సరాల పూర్వం దక్షిణభారతంలోని కేరళ రాష్ట్రంలో జన్మించారు. వీరి తల్లిదండ్రులు ఆర్యాంబశివగురులు. వీరు శివభక్తులు. సద్బ్రాహ్మణులు. సంకరుని బుద్ధివైశిష్ట్యాన్ని చూసి తండ్రి శివగురు 3వ ఏటనే అక్షరాభ్యాసం చేయించి అవసరమైన శ్లోకాలను, శాస్త్రాలను కంఠస్థం చేయించారు. ఐదవ ఏట ఉపనయనం చేసి గురుకులానికి పంపారు. ఆనాటినుండి ఆది శంకరులు గాయత్రీమంత్రాన్ని విడిచిపెట్టలేదు. గాయత్రీ జపం ఆయన దినచర్యలో ఒక భాగం అయ్యింది. అనతికాలంలోనే ఆయన సకల శాస్త్రాలను అధ్యయనం చేశారు.

ఆదిశంకరులు విద్యార్థిగా ఉన్నపుడే 'బాలబోధ సంగ్రహ' మనే ఒక గ్రంథాన్ని వ్రాశారు. నిగూఢమైన విషయాన్ని అంత సరళభాషలో అంత పిన్న వయస్సులో వ్రాయటం గొప్ప విశేషమే. ఆ గ్రంథం ఆయన ప్రతిభకు సాక్షిగా నేటికీ నిలిచి ఉంది. శంకరులు గురుకులంలో ఉండగానే తండ్రి కాలంచేశాడు. అందుచే తల్లి తన ఆశలన్నీ కొడుకుపైనే పెట్టుకుంది. తన కొడుకు గృహస్థుడై భార్యా పిల్లలతో కళకళలాడాలనేది ఆమె కోరిక కాగా, శంకరులకు సంన్యసించి లోకాన్ని సంస్కరించాలనే కోరిక. ఈ రెంటిలో శంకరుల కోరికే నెరవేరింది. శంకరుడు యుక్తితో తల్లిని ఒప్పించి సంన్యాసం స్వీకరించాడు. సరియైన మార్గదర్శనం చేయగల గురువును వెతుక్కుంటూ దేశసంచారానికి బయలుదేరాడు. స్నేహితుడు విష్ణుశర్మకూడా అతనిని అనుసరించాడు.

వీరిరువురు గురువును వెదుకుతూ దేశం నాలుగుదిక్కులా తిరిగారు. చివరకు నర్మదానది ఒడ్డున అమరకాంతంలో యోగి గోవిందపాదుల వద్దకు చేరుకున్నారు. పరస్పర పరిచయాల అనంతరం తనకు తగిన గురువు లభించాడని సంకరులు; తనకు తగిన శిష్యులు లభించారని గోవిందపాదులు గ్రహించారు. వారు గురు శిష్యులయ్యారు. ఆనాడు వైదిక ధర్మం చాలా క్లిష్ట పరిస్థితిలో ఉండేది. ఆ దురవస్థనుండి దానిని ఉద్ధరించడానికి మార్గమేదో వారు తెలుసుకున్నారు. కార్యరంగంలో ప్రవేశించారు.

ఆదిశంకరుల సంస్కరణలు అర్థం కావాలంటే ఆనాటి దేశపరిస్థితులు కొంత తెలిసి ఉండాలి.

సుమారు 5100 సంవత్సరాలకు పూర్వం జరిగిన మహాభారతయుద్ధానంతరం మన వైదికధర్మం క్షీణించటం ప్రారంభమయ్యింది. వీరులు విజ్ఞులు భారతయుద్ధంలో అసువులు కోల్పోగా వితంతువులు, విలపించే బంధువులు మిగిలపోయారు. విద్యావిజ్ఞానాలు, సిరి సంపదలు నశించి అవిద్యా అజ్ఞానాలు, దారిద్ర్యం మిగిలిపోయాయి. దానితో మన వైదికధర్మం క్షీణించటం ప్రారంభమయ్యింది. ముఖ్యంగా యజ్ఞయాగాది వైదిక కర్మకాండ వికృతరూపం ధరించింది. పురుషార్థం లోపించి విలాసాలు, వికృతచేష్టలు చోటుచేసుకున్నాయి. మద్యపాన మాంసభక్షణలు యజ్ఞం పేరుతో చేయటం ప్రారంభించారు. వాతావరణాన్ని పరిశుద్ధం చేసి తద్వారా సర్వ ప్రాణులకు మేలు కలిగించే యజ్ఞయాగాదు లలో పశు

వులను వధించి వాటి మాంసాన్ని ఆహుతులుగా యిచ్చారు. మిగిలిన దానిని ప్రసాదం పేరుతో ఆరగించారు. సోమపానం పేరుతో సురాపానం చేశారు. క్రమంగా పవిత్రమైన యజ్ఞశాలలు కబేలాలుగా (పశువుల వధశాలలుగా) మారిపోయి వికృతరూపం ధరించాయి. మహాత్మా బుద్ధిని కాలంనాటికి యివి తారాస్థాయికి చేరుకున్నాయి.

ఆ పశుహింసను చూసి బుద్ధుని హృదయం ద్రవించిపోయింది. యాజ్ఞికులను ప్రశ్నిస్తే వారు మా వేదాలు ఈ విధంగానే చెబుతున్నా యన్నారు. 'వైదికహింసా హింసా న భవతి'- యజ్ఞం కొరకు చేసే హింస హింసకాదన్నారు. ఆ పశువులు కూడా స్వర్గానికి వెడతాయన్నారు. వేదాలను తరచి చూచే సంస్కృత జ్ఞానం బుద్ధునికి లేకపోవటంవల్ల యాజ్ఞికులతో తర్కం చేయలేకపోయాడు. మానవతావాదం ప్రవేశ పెట్టడమే మంచిదనుకున్నాడు. అహింసయే పరమధర్మ మన్నాడు. సంఘసేవయే నిజమైన యజ్ఞమన్నాడు. ఆ మహానుభావుని ప్రబోధాలు ఆనాటి ప్రజల వివేకాన్ని తట్టిలేపాయి. దానితో వేలమంది లక్షలమంది ఆయన అనుయా యులైపోయారు. అది బౌద్ధ మతంగా ప్రాచుర్యం పొందింది.

మహాత్మా బుద్ధుడు మానవులకు కలిగే కష్టాలకు కారణం కనుగొని పరిష్కారమార్గాలు ప్రచారం చేశాడేకాని పరమేశ్వరుని గురించి గానీ, వేదాలను గురించి గానీ ఏమీ చెప్పలేదు. అయినా, ఆయన అనంతరం ఆయన అనుయాయులు బుద్ధుని ఉపదేశాలతోబాటు దేవుడు లేడనీ, సృష్టికి కర్త ఎవరూ లేరనీ, వేదాలు బూటకమనీ, వాటిని అనుసరించి ఎవరూ ఉన్నతి చెందలేరనీ నాస్తిక్యాన్ని ప్రచారం చేశారు. ఆ నాస్తిక్యాన్ని నిరూపించుకోవటానికి **'తథాగత దర్శనం'** పేరుతో ఒక దర్శనాన్ని వ్రాశారు. అదే నేడు బౌద్ధదర్శనంగా పేరొందింది. జైనముని అనుయాయులునూ బౌద్ధులనే అనుసరించారు. వారు వారి సిద్ధాంతాలను గట్టి పరచుకోవ డానికి 'అర్హతదర్శనం' వ్రాసారు. ఇదే కాలాంతరంలో 'జైనదర్శనం'గా ప్రసిద్ధి చెందింది. ఈ రెంటికన్న ముందే విలాసప్రియులు, సోమరులునైన కొందరు చార్వకమతాన్ని స్థాపించి ప్రచారం చేశారు. వారిది 'చార్వాక దర్శనం'.

పై మూడు దర్శనాలు పరమేశ్వరుణ్ణి కానీ, వేదాలను కానీ ఒప్పుకోవు. వైదిక సాంప్రదాయం ప్రకారం ఏర్పడ్డ వర్ణాశ్రమ ధర్మాలనుగానీ, పంచ మహాయజ్ఞషోడశ సంస్కారాలను గానీ అంగీకరించవు. ఇంతేగాక, అవి వీటిని ఖండిస్తాయి. చార్వాక మతస్థులు నీతి నియమాలను కూడా గణించరు. ఇంద్రియ సుఖాలు, విశ్రాంతే వీరి లక్ష్యం. పరోపకారం మాటే లేదు. 'యావజ్జీవేత్ సుఖం జీవేత్, ఋణం కృత్వా ఘృతం పిబేత్ । భస్మీ భూతస్య దేహస్య పునరాగమనం కుత' అనేదే వాళ్ళ సిద్ధాంతం. ఈ మూడు దర్శనాలు చాలా కుతర్కంతో కూడి ఉంటాయి. తర్కశాస్త్రం బాగా తెలిసినవారేతప్ప మరెవ్వరూ వారి తర్కాన్నీ, కుయుక్తులనూ ఎదుర్కోలేరు. దానితో శంకరాచార్యులవారి వరకు వారి రాజ్యం నిరాటంకంగా నడిచిపోయింది.

శ్రీ శంకరాచార్యులవారు ఆనాటి దేశ పరిస్థితినీ, వైదికధర్మ పరిస్థితినీ బాగా అర్థం చేసుకున్నారు. బౌద్ధ జైన దర్శనాలను చదివి చూచారు. వారి కుయుక్తులేమిటో అర్థ మయ్యాయి. వారిని శాస్త్రార్థాలతో ఓడించ వచ్చుననీ, వైదికధర్మాన్ని పునరుద్ధరించ వచ్చుననీ గట్టి నమ్మకం కలిగింది. దానితో వారు ముందుగా ఉజ్జయనీ నగరానికి చేరుకున్నారు. ఆ కాలంలో ఉజ్జయినీ నగరాన్ని సుధన్వు డనే రాజు పాలించేవాడు. అతడు విద్యాప్రియుడు, జైనగ్రంథాలతోబాటు కొన్ని సంస్కృత గ్రంథాలుకూడా చదివినవాడు. శంకరాచార్యులు ఉజ్జయనీ నగరం చేరుకుని అచట వేదం చెప్పే వైయక్తిక సామాజిక నియమాలనూ, విద్యా విజ్ఞానాలను ఉపదేశించ నారంభించారు. క్రమంగా ప్రజలలో వివేకం జాగృతమయ్యింది. క్రమంగా వీరి విద్వత్తును గూర్చిన ప్రశంస రాజువరకు చేరింది. ఒకనాడు శ్రీ శంకరులు రాజును సందర్శించి 'ఓరాజా ! మీరు విద్యావంతులు. జైన గ్రంథాలు, సంస్కృత గ్రంథాలు చదివినవారు. జైనమతంపై విశ్వాసం కలవారు. ఇంతేగాక, మీరు సత్యాసత్యజిజ్ఞాస కలవారు. కనుక, నేను సూచించేదేమంటే - "ఓడినవారు గెలిచినవారి మతాన్ని స్వీకరించాలనే నియమంతో నాకును మీ జైన పండితులకును శాస్త్రార్థం చేయించండి. గెలిచినవారి మతమునే మీరునూ స్వీకరించండి" అన్నారు. రాజులో జిజ్ఞాస జాగృతమయ్యింది. సంస్కృత గ్రంథాలు చదివినవాడుకనుక ఆయనలో కొన్ని సందేహాలు చోటు చేసుకున్నాయి. ఏది సత్యమో ఏది అసత్యమో తెలుసుకోవాలని చాలా కాలంగా ఎదురుచూస్తున్నాడు. ఈ సవాలును చక్కటి అవకాశంగా భావించి శాస్త్రార్థసభ ఏర్పాటు చేశాడు.

రాజు దేశం నలుమూలలు నుండి ప్రసిద్ధ జైన పండితులను పిలిపించాడు. వందల సంఖ్యలో జైన పండితులు విచ్చేశారు. వారందరిది జైనమత పక్షంకాగా వైదికధర్మ పక్షంలో శంకరాచార్యులవారు ఒక్కరే. సృష్టికర్త ఎవ్వరూ లేరనీ, జీవుడూ, ఈ జగత్తూ అనాదులనీ, ఈ రెంటికీ ఉత్పత్తి వినాశనాలు లేవనీ జైనుల మతం. దీనికి విరుద్ధంగా - ఈ సృష్టికి కర్త ఒకడున్నాడనీ, అతడే దేవుడనీ, వేదం ఈశ్వరీయ జ్ఞానమనీ, సర్వవిద్యా నిలయమనీ, వేదమార్గమే అభ్యుదయ నిశ్శ్రేయసాలను కలిగించే ఉత్తమ మార్గమనీ శంకరుల మతం. ఈ చర్చ చాలా దినములు నడచింది. శంకరాచార్యులవారిని ఎలాగైనా ఓడించి తమలో కలుపుకోవాలని జైనులు చాలా ప్రయత్నం చేశారు. వారిని ఓడిస్తే మొత్తం భారతదేశం జైనం అయిపోతుందని వారి ఆశ. కాని, వారి ఆశలు అడియాశలయ్యాయి. ఆచార్యులవారి సునిశిత తర్కం ముందు ఎవరూ నిలవలేకపోయారు. అందరూ ఓటమిని చవిచూశారు. దానితో విధిలేక వారంతా జైనమతాన్ని విడిచి వైదికధర్మాన్ని స్వీకరించారు. సుధన్వ మహారాజు సత్యాన్ని తెలుసు కోగలిగినందుకు చాలా సంతోషించాడు. శ్రద్ధా భక్తులతోనే వైదిక ధర్మాన్ని స్వీకరించాడు. అంతేగాక, తన మిత్రులైన రాజులకు లేఖలు వ్రాసి వారి వారి రాజ్యాలలో శాస్త్రార్థ సభల నేర్పాటు చేయించాడు. బౌద్ధపండితులుకూడా ఆచార్యుల వారి నెదుర్కొన్నారు. వారి దర్శనం, వారి యుక్తులు ఆచార్యుల వారి తర్కంముందు నిస్తేజ మయ్యాయి. అంతటా ఆచార్యులవారికే విజయం లభించింది. దానితో దేశమంతటా కలకలం మొదలయ్యింది. సామాన్య

ప్రజలునూ ఆలోచించటం మొదలు పెట్టారు. ఐచ్ఛికంగానే జైన బౌద్ధమతాలను విడచి వైదికాన్ని స్వీకరించటం ఆరంభమయ్యింది. సుధన్వరాజు, మిగిలిన రాజులు శంకరా చార్యులవారు దేశమునందంతటా సంచారం చేసి ప్రచారం చేసుకోవటానికి తగిన ఏర్పాట్లు చేశారు. వారి సంరక్షణార్థం కొంత సైన్యాన్ని, సేవలు చేయటానికి పరిచారకులను నియమించారు. వేల లక్షల సంఖ్యలో మత పరివర్తనలు జరిగాయి. ఆచార్యుల వారి వద్ద పెద్ద శంఖం ఉండేదట. దానితో వారు ఓ3మ్‌కార నాదాన్ని చేసేవారట. అది విన్నవారంతా శుద్ధులైనట్లుగా వవించేవారట. అంటే వేలమంది ఓకేసారి శుద్ధులై ఆర్యులయ్యేవారట. అప్పటి నుండి ద్విజులు- విద్యావంతులు యజ్ఞోపవీతాలను ధరించి వేదపఠన పాఠనాలు చేయుటం ప్రారంభించారు.

ఆ విధంగా శంకరాచార్యులవారు 10 సంవత్సరాలు దేశ సంచారం చేసి జైనులుగా బౌద్ధులుగా మారిపోయిన మన వైదికులనందరినీ శుద్ధిచేసి ఆర్యులుగా చేశారు. జైనమందిరాలలో వేదపాఠశాలలను ఏర్పాటుచేసి వేదవిద్యా విజ్ఞానాలను ప్రచారం చెయ్యాలని చాలాకుతూహలపడ్డారు. ఇంతలోనే యిరువురు కపట జైనమునులు బయటికి వేదమతాన్ని స్వీకరించినట్లు నటించి కపట శ్రద్ధాబక్తులతో ఆచార్యులవారికి అంతే వాసులయ్యారు. వారు సమయంచూసి సంకరాచార్యులవారికి వి,?న్రక్త ఆహారం పెట్టారు. ఆ తీవ్ర విషప్రభవంవల్ల ఆచార్యుల వారికి ఆకలి మందగించి శరీరమంతా వ్రణాలుఏర్పడ్డాయి. ఆరు నెలలోనే వారు శరీరాన్ని త్యజించి నిర్యాణం చెందారు. వారిపై విషప్రయోగం జరిగి ఉండకపోతే నూరు సంవత్సరాలపైననే జీవించి యుండేవారు. వేదప్రచారం చేసి ఉండేవారు. మన భారతదేశాన్ని ప్రపంచ గురువుగా, ప్రపంచ సామ్రాజ్ఞిగా చేసి ఉండేవారు. కాని అట్లు జరుగలేదు. ఇది మన దురదృష్టం.

అంత అల్ప వయస్సులో, అంత అల్ప సమయంలో అంతటి మహత్కార్యం చేసిన ఆ మహానుభావుని ప్రతిభకు వెనుక ఉన్నది గాయత్రీ శక్తియే. వారు నేపాల్‌లో ఒక ప్రశాంత రమణీయ స్థలంలో కూర్చుని కొన్ని సంవత్సరాలు గాయత్రీజపం చేశారు. అనంతరం గాయత్రీ వైశిష్ట్యాన్ని కొనియాడుతూ ఒక చిన్న పుస్తకం వ్రాశారు. నేపాల్‌లో అది యిప్పటికీ సురక్షితంగా ఉందట. వారు అందులో-గయత్రీమంత్ర సాధనచేసేవారికి 40 రకాల శక్తులు కలుగుతాయనీ, అది తన స్వీయానుభవమనీ వ్రాశారు. ఒక్కొక్క శక్తిని గురించి వివరించి, యివన్నీ ఎలా కలిసి పనిచేస్తాయో వివరించారట. ఈ విషయం శ్రీ సుధాంశు మహారాజ్‌గారు తమ ఉపన్యాసాలలో చెబుతూ ఉంటారు. "గాయత్రీలో 24 అక్షరాలుంటాయనీ, ప్రతి మనుష్యని మస్తిష్కంలో 24 జ్ఞానతంతు కేంద్రాలు (జ్ఞాననాడులు మెదడుతో కలిసే చోట్లు) ఉంటాయనీ, గాయత్రిలోని 24 అక్షరాలూ ఆ 24 కేంద్రాలను ప్రభావితం చేస్తాయనీ" కూడా వారు చెబుతూ వుంటారు.

శ్రీ శంకరాచార్యులవారు ప్రస్థానత్రయం, అనేక స్తోత్రాలతో బాటు గాయత్రీ మంత్రాన్ని గూర్చిన వ్యాఖ్యాన గ్రంథంకూడా ఒకటి వ్రాశారు. అది 11 ఖండికలుగా (చిన్న చిన్న అధ్యాయాలుగా) ఉంటుంది. ఇవన్నీ ఆయన ప్రతిభకు నిదర్శనంగా నేటికీ నిలిచి ఉన్నాయి.

गुरुकुल कांगड़ी परिसर में
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

6 से 8 जुलाई, 2018

आदरणीय श्री ....

सादर नमस्ते!

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। आपको यह ज्ञात ही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन 6 से 8 जुलाई, 2018 की तिथियों में विशाल स्तर पर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी परिसर में आयोजित किया जा रहा है। यह सम्मेलन लगभग एक दर्जन गुरुकुलों के संचालक एवं आर्ष शिक्षा पद्धति को समर्पित श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में आयोजित होगा। इस सम्मेलन में देश–विदेश से आर्यजनों, गुरुकुल के संचालक आचार्य एवं आचार्यागण, गुरुकुल के छात्र–छात्राओं सहित हजारों की संख्या में भाग लेने के लिए पहुँच रहे हैं। यह महासम्मेलन आर्य समाज एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के इतिहास में पहला सम्मेलन होगा। इस महासम्मेलन में गुरुकुलों की छात्र–छात्राएँ अपनी–अपनी विशेष योग्यताओं **(बौद्धिक एवं शारीरिक क्षमताओं)** का प्रदर्शन करेंगे। इस महासम्मेलन के माध्यम से आर्ष शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली तथा वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करने के लिए व सरकार से विशेष सहयोग प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 21 अप्रैल, 2018 को सम्पन्न हुई थी जिसमें विशेष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के सम्बन्ध में विचार–विमर्श किया गया। इस बैठक में जो भी उपस्थित हुए थे, सम्मेलन के आयोजन के सम्बन्ध में उनके जो सुझाव प्रस्तुत हुए वह बहुत ही उपयोगी है और सम्मेलन को सफल बनाने में सुझाव विशेष सहयोगी बनेंगे। सभी ने अपने उद्‌बोधन में इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपने माध्यम से/अपनी संस्था की ओर से .... रुपये की सहयोग राशि प्रदान करने की घोषणा भी की है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी सहयोग राशि सभा कार्यालय में **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली'** के नाम चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से शीघ्र भेजने की कृपा करें। जो महानुभाव अपनी सहयोग राशि सीधे बैंक खाते में भेजना चाहें, वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बचत खाता संख्या - 600110100005689, IFSC Code : BKID0006001 बैंक ऑफ इण्डिया, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 में जमा करा सकते हैं। जो महानुभाव सीधे बैंक खाते में धनराशि जमा करायें वह अपने द्वारा जमा कराई गई धनराशि की सूचना दूरभाष पर सभा कार्यालय को अवश्य दें। जिससे आपकी सूचना के आधार पर सभा कार्यालय की ओर से आप द्वारा भेजी गई राशि की रसीद बनाई जा सके। जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि इस प्रकार के सम्मेलन आयोजित करने में बहुत बड़ी धनराशि व्यय होती है और इस राशि की व्यवस्था आप सभी समाज सेवी आर्यजनों के सहयोग से ही पूर्ण हो सकती है। आपसे यह भी निवेदन है कि आप सम्मेलन में अधिक से अधिक **आर्यजनों के साथ पहुँचें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले आर्यजनों एवं अपने क्षेत्र के गुरुकुलों के आचार्यों से सम्पर्क कर उन्हें छात्र–छात्राओं सहित अधिक से अधिक संख्या में सम्मेलन में पहुँचने के लिए प्रेरित करें।**

हमें विश्वास है कि यह ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन भारतीय शिक्षा पद्धति को बदलने में एक मील का पत्थर साबित होगा। इस महासम्मेलन को सफल बनाने में आपका सहयोग तन–मन–धन से अपरिहार्य है। आशा है इस ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनाने में आपका पूर्ण सहयोग सार्वदेशिक सभा को प्राप्त होगा।

सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान मो.:–0–9013783101

(प्रो. विट्ठलराव आर्य)
सभा मंत्रीमो.:–09849560691

వైదిక ప్రేమ తత్వము

(వేదము భగవంతుని ద్వారా మానవునికి ఇవ్వబడిన జ్ఞాన రాశి. అది సమస్త సత్య విద్యల కోశము. మానవుడు పరిపూర్ణ ఆనందమును అనుభవించుటకు, సమస్త క్లేశముల నుండి ముక్తుడగుటకు, భగవంతుని జ్ఞానవే అవసరము. సర్వజ్ఞుని తెలిసికొనుటకు సర్వజ్ఞుని ద్వారా తెలుపబడిన ఉపాయాలే తగును. అల్పజ్ఞుని ద్వారా తెలువబడిన ఉపాయాలు తగవు. భగవంతుని ద్వారా చూపబడిన మార్గము దేశ కాలపరిస్థితికి కట్టుబడదు. సమస్త మానవులకు సదా ఒకే విధముగా ఉపయోగపడును.

భగవంతుని తెలిసికొనుటకు మానవు డేమి చేయవలయునో వేదాలలో స్పష్టముగా చెప్పబడినది. దానిని చదివిన తదుపరి ఏ మానవుడు కూడ నాస్తికుడు కాజాలడు. దానిని చదివిన నిజముగా భగవంతుని స్వరూపము తెలియగలదు. మానవుడు భగవంతుని తెలిసికొనుటకు సమస్త దుఃఖముల నుండి విడిపోయి మోక్షమును సంపాదించుటకే కాదు, లోకములో కలసిమెలసి ఉండుటకు కూడ అహింసయే అవసరము. లోకములో జీవించుటకు, మోక్షమును సంపాదించుటకు ఒకే ఒక ఉపాయము అహింస.

అహింస లేనిచోట మానవత్వము నిలబడలేదు. దేశము, దేశభక్తి, దేశరక్షన. మానవ సమాజోన్నతి అసంభవము. మనము అహింసను పాటించి ఉన్నయెడల దేశము పరాధీనమై పోయెడిది కాదు. సమాజము ఇంత పతనమై పోయెడిది కాదు. మత మతాంతరములు, అజ్ఞానము, మూఢాచారము, నాస్తికత్వము వ్యాపించెడిది కాదు. అహింస యొక్క ఉత్కృష్ట స్వరూపమును వేదములలో చూడగలరు. శ్రీ సోమయ్య బాగుగా సేకరించి వ్యాఖ్యానించినాడు. - సంపాదకుడు)

వేదము ప్రతిపాదించే ఉన్నత మానవ ధర్మాల్లో ప్రేమతత్వం అతి ముఖ్యమైంది బహుశ: అంతటి ఉత్తమ ఉదాత్తభావం వేదంలోకాక, అన్య సాహిత్యంలో లభించదేమో. 'ప్రేమ' పదానికి నిఘంటువుల్లో ఇచ్చిన అర్థాలు స్నేహము, హర్షము, దయ, క్రీడ, సంతోషం మొదలగునవి. ప్రేమ అనేది ఎలా ఉండాలో మనకొక వేదమంత్రం చెబుతుంది.

సహృదయం సాంమనస్యమవిద్వే షం కృణోమి వః । అన్యో అన్యమభిహర్యత వత్సం జాతి మివాఘ్న్యా ॥

అథర్వ. 3-10-1.

మానవులంతా ఒకరియెడ ఒకరు ద్వేషభావం విడిచి మంచి హృదయం కలిగి మంచి మనస్సు కలిగి ఉండాలి. అప్పుడే పుట్టిన తన బిడ్డను గోవు ఆప్యాయతతో నాకుతూ, తన ప్రేమను తెలిపినటుల మానవులంతా పరస్పరం ప్రేమ భావంతో ఉండాలి అంటుంది వేదం.

మానవులు పరస్పరం ప్రేమ భావంతో ఉండటమే చాలదు, ప్రతి ప్రాణిని మిత్ర భావంతో- స్నేహభావంతో చూడు మంటుంది వేదం.

దృతె దృగ్ంహ మా మిత్రస్య మా చక్షుషా సర్వాణి భూతాని సమీక్షన్తామ్ । మిత్రస్యాహం చక్షుషా సర్వాణి భూతాని సమీక్షే ।
మిత్రస్య చక్షుషా సమీక్షామహే ॥

యజు. 36-18

సమస్త దుఃఖాల్ని, అజ్ఞానాన్ని తొలగించే ప్రభూ ! నన్ను సర్వ ప్రాణులు స్నేహభావంతో చూచెదను గాక ! మేమందరం పరస్పరం మిత్రభావంతో ఉండేటు అనుగ్రహించు ప్రభూ !

మనుష్యులు పరస్పరం ప్రేమ భావంతో ఉండక వైరభావంతో ఉంటే మృత్యు ముఖంలో పడతారని వేదం చెబుతుంది.

మిథో విఘ్నానా ఉపయన్తు మృత్యుమ్

అథర్వ. 8-8-21

పరస్పరం వైరం, విరోధం చూపించు కునేవారు, కలహించేవారు మృత్యు ముఖంలో పడతారు అంటుంది వేదం అందుచేత వేదభక్తుడు తాను అందరికి ప్రేమపాత్రుడు కావాలని భగవంతుణ్ణి ప్రార్థిస్తాడు చూడండి.

ప్రియం మా కృణు దేవేషు ప్రియం రాజను మా కృణు । ప్రియం సర్వస్య పశ్యత ఉత శూద్ర ఉతార్యే॥

అథర్వ. 19-62.

"పరమేశ్వరా ! నన్ను విద్వాంసుల ప్రేమకు పాత్రుణ్ణి చెయ్. రాజులకు కూడ ప్రియుడనయ్యేట్లు ఆశీర్వదించు నన్ను చూసే అందరికి ఆర్యులకు, అనాథలకు, శూద్రులకు కూడ ప్రేమ పాత్రునిగా చెయ్". అంటే ఇక్కడ వర్ణభేదం లేకుండా-బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, శూద్రాది సమస్త వర్ణాల వారికి నేను ప్రేమ పాత్రునిగా ఉండగోరుతాను అని అర్థం.

పాపుల్ని కూడ ప్రేమించి వారి ఉన్నతికై తోడ్పడు మంటుంది వేదం.

ఉత దేవా అవహితం దేవా ఉన్న యథా పునః ।
ఉతాగశ్చక్రుషం దేవా దేవా జీవయథా పునః ।

అథర్వ. 4-13-1

దివ్యగుణ సంపన్నులైన మహా పురుషులారా ! అవహితరొఅదోగతి పాలయిన వారిని, ఆగః చక్రుషరొఅపరాధములు, పాపములు చేసినవారిని, మాటిమాటికి ఉద్ధరించడానికి మార్గాన్ని చూపించండి వారిలో ఆత్మజ్యోతిని - జ్ఞాన ప్రకాశాన్ని వెలిగించండి.

సర్వ ప్రాణుల్ని ప్రేమ భావంతో చూచుకొన్నందువల్ల కలిగే ఫలితాన్ని గురించి వేదం ఇలా చెబుతున్నది.

యస్తు సర్వాణి భూతాన్యాత్మ న్యేవానుపశ్యతి ।
సర్వభూతేషు చాత్మానం తతో న విచికిత్సతి ॥

యజు. 40-6

సర్వప్రాణుల సుఖదుఃఖాల్ని లాభనష్టాల్ని తనవిగా భావించేవాడు సూక్ష్మమైన ప్రకృతి మొదలు, స్థూలమైన ప్రపంచ పదార్థాలన్నింటికి పరమేశ్వరుడు వ్యాపించి ఉన్నాడని స్వానుభవంతో గిరినవాడు, సమస్త సంశయాల్ని విడిచి మోక్షం పొందుతాడు. బ్రహ్మజ్ఞానం కలిగిన వ్యక్తికి ప్రాణులన్ని తన

ఆత్మతో సమానంగా కనబడతాయి. వాటి నతడు ప్రేమించ గలుగుతాడు అంటుంది వేదం.

యస్మిన్ సర్వాణి భూతాన్యాత్మైవాభూద్విజానతః । తత్రకో మోహః కః శోక ఏకత్వమనుపశ్యతః॥

యజు. 40-7

యోగికి, ఏకత్వదర్శనం-బ్రహ్మ జ్ఞానం కలిగినపుడు ప్రాణులన్నీ తన వలెనే కనబడుతాయి, ఆయా ప్రాణుల సుఖదుఃఖాలు తనవిగా భావించి, వాటి దుఃఖాలను దూరం చేయడానికి ప్రయత్నిస్తాడు. అంటే ప్రతి ప్రాణిని ప్రేమించగలిగిఆత్మోపమానంగా చూడగలిగిన వ్యక్తిలో శోకరొదుఃఖం, మోహరొఅజ్ఞానం ఉండవు అంటుంది వేదం.

Love thy neighbour as thyself, నీవలె నీ పొరుగువాణ్ణి ప్రేమించుమని క్రీస్తు మహాశయుడు బోధించాడు ఇ వేదం ఇంకా ఉదాత్తమైన భావంతో - మానవులనేకాదు, సమస్త ప్రాణికోటిని ప్రేమించి వాటి దుఃఖాలను తొలగించడానికి ప్రయత్నించవలసిందిగా మనల్ని ఆదేశిస్తున్నది. విశ్వ ప్రేమలో పరాకాష్ఠ నందుకొన్న భావాలు వేదంలో మనం చూడగలం. ఇంతటి ఉదాత్త భావం ప్రపంచ సాహిత్యంలో లభించడం అరుదు. (వేదము ఈశ్వరుని జ్ఞానమగుటయే దీనికి కారణము -సంపా)

నేను ఇతరులను పీడించే వాడినైతే ఇప్పుడే మృత్యు ముఖాన పడుదునుగాక ! అంటున్నాడు వేదభక్తుడు చూడండి.

"అద్యా మురీయ యది యాతుధానో । అస్మి యది వాయుస్తప పూరుషస్య ॥

అథర్వ. 8-4-15

నేను, యాతుధాసః ా ప్రజలను పీడించే వాడినైతే లేక వారిని, తతప ా ఇక్కట్లకు గురిచేసే వాడినైతే ఈరోజే, కాదు ఇప్పుడే, మురీయా మృత్యు ముఖాన పడుదునుగాక ! అంటాడు వేదభక్తుడు. వేదానుయాయులమైన మనం ప్రాణుల ఎడ, సోదరమానవుల ఎడ ఎంతగా ప్రేమ భావంతో ఉండాలో ఎవరి మనస్సును నొప్పించకుండ ఎంతటి సౌమ్యభావంతో ఉండాలో మనకీ మంత్రం ఉపదేశిస్తుంది. ఈర్ష్యాద్వేషాలు చూపేవాడు చనిపోయిన శవంతో సమానమని వేదం చెబుతుంది.

యథా భూమిర్మృతమనా మృతాన్మృతమనస్తరా । యథోత మమ్రుషో మన ఏవేర్ష్యోర్మృతం మనః ॥

అథర్వ.క్ష618-2

శ్రీకృష్ణుని జీవితాన్ని అధారంగా చేసికొని అతనివంటి జీవితాన్ని ఊహించి 'క్రీస్తు' అనిపేరు పెట్టి ప్రచారము చేసినారని మరికొందరు. క్రీసుత అనువ్యక్తి 13 ఏండ్ల ప్రాయములో తనదేశాన్ని వదలి భారతదేశానికి వచ్చినాడని, అపుడు ఉత్తర భారతదేశములో వ్యాపించి ఉన్న బౌద్ధమత పుస్తకాలు చదివి తన దేశము వెళ్లి దానినే అచట ప్రచారము జేసినాడని "నోటోవిచ్" అనే వ్యక్తి పరిశోధనల ద్వారా తెలిసికొన్నాడు. ఒకవేళ ఇది నిజమేని క్రీస్తు నేర్చుకున్నది బౌద్ధ మతమే. వైదిక ధర్మములో నున్న అహింసను బౌద్ధ మతము తన పేరుతో ప్రచారము చేసినదే కాని తాను కనుగొన్న దేమిలేదని చెప్పవచ్చును. పై మంత్రములు దీనికి ఉదాహరణము. యోగము అహింసతోనే ప్రారంభమగును. సమస్త క్లేశముల నుండి విడిపోయి పూర్ణ ఆనందానుభూతికి ఉపాయమే యోగము.

అహింసావరమో ధర్మః సర్వప్రాణభృతాం స్మృతః ।తస్మాత్ ప్రాణభృతః సర్వాన్నహింస్యాద్ బ్రాహ్మణఃక్వచిత్ ॥

మహాభారతము, అ.పర్వము. 11-1-12

అహింస సర్వజీవులకు పరమ ధర్మము. కావున బ్రాహ్మణుడు (యోగము నభ్యసించువాడు) ఏ ప్రాణిని చంపగూడదు.

దీనిని అర్థము చేసికొనక తన పొరుగింటి వానిని ప్రేమించుమని క్రీస్తు పేరుతో ప్రచారము చేయబడుచున్నది. పొరుగు వానిని ప్రేమించుట అహింస కాదు. సమస్త ప్రాణు ఉపకారమూ హితము కోరుటయే అహింస. (సంపా.)

భూమి జడము. మృతశవంకంటే, మృత తరము, అలాగే చనిపోయిన వాని మనస్సు కూడ మృతమైనటుగా ఈర్ష్యను, ద్వేషాన్ని చూపేవాని మనస్సు కూడ చనిపోయినట్లే. అందుచేత ఎవరినీ మనం ద్వేషంతోను, అసహ్యంతోను చూడరాదం టుంది వేదం. ఈ రహస్యం తెలిపిన వేదభక్తుడు ఏమంటున్నాడో చూడండి.

యవయాస్మద్ ద్వేషో యువయారాతిః ॥

యజు. 5-26

ఓ పరమేశ్వరా ! మా జీవితాలనుండి ద్వేష భావాల్ని తొలగించి మమ్ము దయతో చూతువుగాక !

"అవ పియా అధుషత" । యజు. 3-51

మేము ప్రేమ స్వరూపులమై అందరి దుఃఖాలను దూరం చేయుదుముగాక ! పరాకాష్ఠ నందిన అహింసాతత్వమే ప్రేమతత్వమని అహింసా వ్రతంలో సుప్రతిష్ఠితుడైన వ్యక్తే సర్వ ప్రాణుల్ని సమస్త మానవుల్ని ప్రేమభావంతో చూడగలడని యిచట చెప్పవలసి ఉంది. 'అహింసా' పదానికి అర్థం వ్యాసమహర్షి తన యోగదర్శన వ్యాసమహర్షి తన యోగదర్శన వ్యాఖ్యానంలో ఇలా చెప్పాడు.

"తత్రాహింసా సర్వథా సర్వదా సర్వభూతానామనభి ద్రోహః"

వ్యాసభాష్యం యోగ. సూ. 2.30

అన్ని విధాలా, అంటే మనోవాక్కాయ కర్మలతో, అన్నివేళలా ప్రాణులన్నిటి ఎడల విరోధభావం - ద్రోహచింతన విడిచిపెట్టి ఉండడమే అహింస అవుతుందని మహర్షి అఇటాడు. ఈ అహింసా వ్రతాన్ని పాటించేవ్యక్తి సమస్త మానవుల్ని, సమస్త ప్రాణుల్ని నువికాలమైన తన హృదయంతో ప్రేమించగలుగుతాడు. ఆయా ప్రాణుల దుఃఖాన్ని ఆర్తిని తనకు చేతనైనంత వరకు దూరం చేయడానికి ప్రయత్నిస్తాడు.

న వేదైర్న చ దానైశ్చ న తపోభిర్న చాధ్వరైః । కదాచిత్సద్గతిం యాంతి పురుషాః ప్రాణిహింసకాః ॥ పద్మ పురాణం

వేదపఠనం ఎంతగా చేసినా దానధర్మాలు పలుమార్లు చేసినా ఎన్నో సంవత్సరాలు కఠిన తపస్సులు చేసినా, యజ్ఞయాగాదులు ఎన్ని చేసినా ప్రాణుల్ని హింసించే నరులకు సద్గతి లేదంటుంది పద్మపురాణం.

అద్వేష్టా సర్వభూతానాం మైత్రః కరుణ ఏవ చ । నిర్మమో నిరహంకారస్సమదుఃఖసుఖః క్షమీ ॥

గీత. 12-13

సమస్త ప్రాణుల ఎడ ద్వే, భావ్ విడిచి

వాటి ఎడ మిత్రభావం, దయ కలిగి ఉంటూ, మమకార, అహంకారాలను వదలి, సుఖదుఃఖాలను సమంగా అనుభవించ గలిగినవాడు నిజమైన యోగి, భక్తుడు అవుతాడని గీతాకారుడంటాడు.

ఇలా వైదిక ప్రేమ తత్వాన్ని అనుసరించి అన్యగ్రంథాలు కూడ ప్రేమ తత్వాన్ని గురించి ఎంతగానో చెప్పాయి.

ఈ ప్రేమ తత్వాన్ని ఆచరణలో చూపించిన మహానుభావులెందరో ఈ లోకంలో ఉన్నారు. అట్టి మహాపురుషులలో ఆర్యసమాజ సంస్థాపకుడైన దయానందుడొకడు. తనకు విషము నిచ్చి తన మృత్యువునకు కారణభూతుడైన జగన్నాథుడనే వంటవానికి కొంత ధనమిచ్చి, "వెళ్ళు, నీ ప్రాణాలను రక్షించుకో" అని చెప్పిన పరమదయాళువు, ప్రేమమూర్తి ఆయన. ం వేదధర్మాన్ని జీవితమంతా ప్రచారం చేసిన ఆయన తన ఆచరణలోకూడ ఆ ప్రేమతత్వాన్ని నిరూపించాడు.

అలాగే, గౌతమబుద్ధుని జీవితం ఎంతటి మహత్తరమైంది ? ఆయన చిన్నవాడే ఒక నూరు బాణానికి గురియై నేలకూలిన హంసను చూచి, హృదయం ద్రవించి, దానికి వైద్యం చేయించి, దాని గాయం మాన్పి. ప్రాణభిక్షపెట్టిన దయామూర్తి. అంగుళీమాలుడనే పరమ కిరాతకుడైన బందిపోటు దొంగను తన ప్రేమమయ దృక్కులతో వీక్షించి అతని హృదయంలో పరివర్తన తెచ్చి, తన అంతేవానిగా – శిష్యునిగా స్వీకరించిన పరమ కరుణా సముద్రుడు.

తనను పిస్టల్‌తో కాల్చి, తన మృత్యువునకు కారకుడైన గోడ్సేను బంధించక విడిచి పెట్టుదని కోరిన ప్రేమమూర్తి గాంధీజీ, వీరందరూ జగత్ప్రసిద్ధులైన ప్రేమమూర్తులు. మరి అజ్ఞాతంగా ఎందరు మహామహులు లోకంలో ఉన్నారో మనకు తెలియదు.

ప్రేమలో భేదాలు : పాక్షిక ప్రేమ : ప్రేమ ఉన్నచోట త్యాగు ఉంటుంది.

క్రూర జంతువులైన పులి మొదలైన వాటిల్లో కూడ ప్రేమ ఉంటుంది కాని ఆ ప్రేమ తమ సంతానానికే పరిమితమై ఉంటుంది. అన్యజంతువులను చూచినపుడు అవి వానిపైబడి పంపడానికి ప్రయత్నిస్తాయి. సాధుజంతువులు అలా కాదు. అవి తమ సంతానాన్ని ప్రేమిస్తాయి. ఇతర జంతువుల ఎడ ఉదాసీనభావంతో ఉంటాయి. న అయితే తమ సంతానానికి ఇతర జంతువులవల్ల అపకారం జరగబోతున్నదని తెలిస్తే అవి తమ ప్రాణాలనయినా ఒడ్డి తమ సంతానాన్ని రక్షించుకోవాలని చూస్తాయి. ఉదా॥ కోడి తన పిల్లలను వెంట బెట్టుకొని త్రిప్పుతూ, దొరికిన ఆహారాన్ని తన చిన్న పిల్లలకు తినడానికి ముక్కుతో అందిస్తూ ఇంటిదగ్గర తిరుగుతూ ఉంటుంది. ఇంతలో గ్రద్ద కాని, పిల్లి గాని తన పిల్లలను ఎత్తుకుపోవడానికి వచ్చిందని తెలిస్తే, తనకేమైనా అవుతుందేమో అనికూడా లెక్కచెయ్యకుండా ఎగిరి గద్ద వెంటగాని, పిల్లి వెంటగాని పడి తరుముతుంది తన పిల్లలను రక్షించుకుంటుంది. ఇలా క్రూరజంతువుల్లో, అస్మ ప్రాణుల్లో కూడ ప్రేమతత్వాన్ని మనం చూస్తాం.

మనుష్యులలో తల్లికి తన సంతానముపైన ఎక్కువ ప్రేమ ఉంటుంది. తనమాసాలు మోసి, కని, పెంచి, పిల్లలను పెద్ద చేయడంలో తల్లి ఎన్నో కష్టనష్టాలకు గురి అవుతుంది. అలాగే తండ్రి కూడ బిడ్డలపై ప్రేమతో ఎన్నో కష్టాలను సహించి ధనాదులు సంపాదించి. వారిని పోషించాలని చూస్తాడు. తల్లిదండ్రు లిరువురు కూడ పస్తు (ఉపవాసా) లుండి అయినా తమ సంతానాన్ని అభివృద్ధికి తేవాలని చూస్తారు. వారిలో ప్రేమతోపాటు త్యాగంకూడ వారి సంతానం ఎడ ఉంటుంది. అంటే ప్రేమ ఉన్నచోట త్యాగంకూడ ఉంటుందని మనం తెలుసుకోగలుగుతాం.

యువతీ యువకలు కొందరు పరస్పరం గాఢంగా ప్రేమిస్తారు. ఒకరిని ఒకరు చూడకుండ ఉండలేనంతగ వారి ప్రేమ సాగుతుంది. ఆ ప్రేమికుల జంటలో ఒకరికి తల్లిదండ్రులు వేరే సంబంధం చూచి పెండ్లి చేశారనుకొండి. ఇక వారి బాధ వర్ణనాతీతం. ఒక్కొక్కపుడు ఆ బాధను తట్టుకోలేక ఆత్మహత్యలకు కూడ ఆ ప్రేమికులు పాల్పడుతారు. ప్రేమ అంతటి బలవత్తరమైంది.

ప్రేమకు కామానికి భేదం ఉంది, ప్రేమ ఆధ్యాత్మికపరమయింది కామం శారీరకమైంది స్త్రీ పురుషులలో ఉండే శారీరక వాంఛ కామ సంబంధమయింది. ఒక్కొక్కప్పుడు కొందరు స్త్రీ, పురుషులు శారీరక వాంఛ లేకుండానే పరస్పరం ప్రేమ భావంతో ఉంటారు. ఒకరి సుఖదుఃఖాలు ఒకరు చెప్పుకొని తమ హృదయ భారాన్ని తగ్గించుకొని కొంతవరకు శాంత చిత్తులవుతారు. పరస్పరం స్నేహం, ఆప్యాయతలతో ఉంటారు. ఒకరిని ఒకరు చూడకుండ ఉండలేనంతగా బాధపడతారు. ఇటువంటి ప్రేమలో స్వార్థం ఉండదు. అది ఆధ్యాత్మిక ప్రేమ, వారు ఒకరి ఎడ ఒకరు త్యాగభావంతో ఉంటారు. అయితే ఇలాంటి ప్రేమికులను చూచి లోకులు అపార్థం చేసికొని వారిని నిందించే ప్రమాదం కూడ ఉంది.

ప్రేమకు అంతరాయాలు :

తల్లిదండ్రులు తమ పిల్లలను ప్రేమించినంతగా ఇతరుల పిల్లలను ప్రేమించలేక పోతారు కారణం ? వారు 'తమ పిల్లలు' అనే మమకారం, వారిని ఆ విధంగా పాక్షిక ప్రేమికుల్ని చేస్తుంది. ఇక మతస్థుడు తన మంత వారిని ప్రేమిస్తాడు. అన్య మతాలవారి ఎడ అతనికి ఉదాసీనతగాని, ద్వేషం గాని ఉంటుంది. ఇది పాక్షికప్రేమే. ఒక్కొక్క వ్యక్తి ఇతడు తనకులంవాడు అని తెలిస్తే అతణ్ణి ప్రేమిస్తాడు. ఇతర కులాల వాళ్ళయెడ ద్వేషంతో గాని ఉదాసీనుడుగాగాని ఉంటాడు. ఇదీ పాక్షిక ప్రేమే. ఇంకొక వ్యక్తి ఇతనిది తనదేశం, తనరాష్ట్రం, తన జిల్ల, తన ఊరు, తన సంగం, ఇతడు తన బంధువు అంటే ప్రేమిస్తాడు. లేకుంటే ఉదాసీనుడుగా ఉంటాడు. కొందరు కుక్క పిల్లి మొ॥ జంతువుల్ని బాగా ప్రేమిస్తారు. కాని సాటి మనిషిని ప్రేమించలేరు. కొందరు స్త్రీలను ప్రేమిస్తారు. కొందరు వారిని ద్వేషిస్తారు. కొందరు పురుషుల్ని ప్రేమిస్తారు. కొందరు వారిని ద్వేషిస్తారు. కొందరు ధనవంతుల్ని ప్రేమిస్తే, కొందరు నిర్ధనుల్ని, దిక్కులేని వారిని ప్రేమిస్తారు. అంటే, జాతి, మత, కుల ప్రాంత, వర్గ, వర్ణ, దేశాది విభేదాల వల్ల మనుష్యుల్లో ఉండే ప్రేమ పాక్షికమైనదిగా మారుతుంటుంది ! మనం ఇలాంటి పాక్షిక ప్రేమకు అతీతులం కావడానికి, సర్వులను ప్రేమభావంతో చూడడానికి మనస్సును మలచుకోవాలి. హృదయాన్ని విశాలం చేసికోడానికి ప్రయత్నించాలి తన ప్రేమహృదయాన్ని చూపుల్లో, వాక్కుల్లో, చేతల్లో

కూడ కనబరచాలి. అటువంటి వ్యక్తిని అందరూ ప్రేమిస్తారు. అందరినీ అతడు ప్రేమిస్తాడు. అతడంటే ఎవరికీ భయంగాని, కోపంగాని, ఉదాసీన భావంగాని ఉండదు. అతణ్ణి అందరూ గౌరవిస్తారు. భక్తుడు భగవంతుణ్ణి ప్రేమిస్తాడు. నిజమైన భక్తుడు భగవంతుణ్ణి తనకు ఇది కావాలి, అది కావాలి అని కోరదు × నీ ఇచ్ఛయే నెరవేరుగాక ప్రభూ ! అంటాడు. ప్రారబ్ధ వశాత్తు తనకేది లభిస్తే దానితోనే తృప్తిపడి ఉంటాడు. సుఖాలు కలిగితే పొంగడు దుఃఖాలు కలిగితే క్రుంగడు. రెంటినీ సమంగా అనుభవిస్తాడు. భక్తుడు భగవంతుని ప్రేమించడం కేవలం ఆయనలోని ప్రేమామృతాన్ని తనివితీరా గ్రోలడానికే.

"న ఈశ్వరః అనిర్వచనీయ ప్రేమస్వరూపః" కాండిల్య భక్తి సూత్రము.

పరమేశ్వరుడు మాటలతో వర్ణించడానికి అందని పరమ ప్రేమ స్వరూపుడు ఆయనకు జీవుల ఎడగల అనంతప్రేమ, దయవల్లనే ఈ ప్రపంచాన్ని సృష్టించాడు. అనేక విధాలుగా మనం ఈ లోకంలో సుఖపడడానికి కారణభూతుడవుతున్నాడు. భగవంతుడు తండ్రి జీవులు అతని సంతానం. భగవంతుడు సమస& జీవులను ప్రాణికోటిని తన అనంత ప్రేమతో పాలించి, పోషించి రక్షించుతున్నాడు. అటువంటి పరమేశ్వరుణ్ణి పొందడానికి భక్తుడు కూడ ప్రేమమూర్తిగా మారతాడు. సమస్త మానవుల్లో సర్వప్రాణి జాతంలో, సర్వత్ర పరమేశ్వరుడు నిండి నిబిడీ కృతుడై ఉన్నాడని భక్తుడు గుర్తిస్తాడు. అందుచేతనే అతడు ఎవరికీ అపకారం చేయాలని తలచడు. ఎవరినీ ద్వేషించడు. అన్యప్రాణుల సుఖదుఃఖాలు తనవిగా భావించి, ఆయా ప్రాణుల ఆర్తిని దుఃఖాన్ని తొలగించాలని ప్రయత్నిస్తాడు. ఇది ప్రేమకు పరాకాష్ట, ఇదే వైదిక ప్రేమతత్వం.

ఇక కొందరు ప్రాశ్చాత్య ప్రముఖులు ప్రేమతత్వాన్ని గూర్చి వెలువరించిన అభిప్రాయాలను ఇక్కడ ఉట్టంకిస్తాను.

"Life is a flower of which love is the honey" -Victor Hugo

జీవితం ఒక పుష్పం. అందులోని (సారభూతమైన) మకరందమే ప్రేమ అంటాడు విక్టర్ హ్యూగో.

"When one is truly in love one not only says it, but shows it" - Long fellow.

ఒకడు ఇతరులను నిజంగా ప్రేమిస్తున్నట్లయితే, అతడు దాన్ని మాటల్లో చెప్పడమే కాదు చేతల్లో చేసి చూపిస్తాడు" అంటాడు 'లాంగ్ ఫెలో'.

He Prayeth well who loveth well
Both man and bird and beast
He Prayeth best who loveth best
All things both great and small
For the dear god who loveth us
He made and loveth all' - S.T. Coleridge

"మనిషి, పక్షి, పశువు అని భేదం లేకుండ సర్వప్రాణుల్ని బాగా ప్రేమించువాడే బాగా ప్రార్థన చేస్తున్న వాడవుతాడు. మనల్ని ప్రేమించే దేవుడు అందరినీ మనం ప్రేమించాలని కోరుతాడు, ఎక్కువ తక్కువ అని భేదం ఎంచకుండ అన్నింటిని, అందరిని ఉత్కృష్టంగా ప్రేమించువాడు మిక్కుటంగా ప్రార్థన చేసిన వాడవుతాడు" అన్నాడు 'కాలరిడ్జ్'.

"He that loveth not his brother whom he hath seen Cannot love God whom he hath not seen" - St. John.

ఒకడు తనకు కనబడే సోదరుణ్ణే ప్రేమించకపోతే, తనకు కనబడని భగవంతుణ్ణి అతడు ప్రేమించనేలేడు అంటాడు సెయింట్ జాన్.

"He that loveth not knoweth not God" -St. John.

"ప్రేమించనివాడు భగవంతుణ్ణి తెలిసికోలేడు" అని కూడ అంటాడు సెయింట్‌జాన్.

ఇలా పాశ్చాత్య ప్రముఖులు కొందరు వైదిక ప్రేమతత్వానికి అనుగుణంగానే తమ భావాలను ప్రకటించారు. వేదం ప్రాచ్య, పాశ్చాత్య భేదం లేకుండ మానవ మాత్రులందరికి అవసరమైన, అమూల్యమైన సర్వవిద్యలను బోధించింది. వాటిలో ప్రేమతత్వం ఉత్కృష్టమైంది. ఆ ప్రేమతత్వాన్ని సర్వమానవకోటి, - జాతి, దేశ, కుల, మత, వర్ణ, వర్గ, స్త్రీ, పురుషాది భేదాలను విడిచి ఆచరణలో పెట్టినపుడు ఈ భూలోకం స్వర్గలోకమవుతుంది. సమస్త మానవులు సుఖశాంతులతో వర్ధిల్లుతారు దేశాల్లో అల్లకల్లోలా లుండవు. మారణ హెూమాలుండవు యుద్ధాలుండవు వేయేల ? సర్వప్రాణులు సుఖస్తాయి. మన మందరం పరస్పరం విద్వేషాలను విడిచి ఆ మార్గాన పయనించుదాం ఆనందిద్దాం. భగవంతుడు మన కా శక్తిని ప్రసాదించుగాక ! ఓం శాంతి శ్శాంతి శ్శాంతిః

बाढ़ में जरूरतें क्यों नहीं बहतीं ?

उसने पूछा
मैंने कहा --जरूरतें बाढ़ की कोख में बढ़ती हैं
उन बढ़ी हुई जरूरतों का क्या होता है? उसने फिर पूछा
मैंने कहा --बढ़ी हुई जरूरतें विज्ञापनों में ढाली जाती हैं
उनसे सत्ता के संचालन
और राजनीति की ऐसी सूरतें निकाली जाती हैं
जिनसे जन-प्रतिनिधियों की चिन्ता को फलक मिलती है,
एक ललक मिलती है, बाढ़ में डूबे हुए लोगों को जीने की,
जीने की ललक
मरी हुई बच्ची और बहे हुए भाई को
डबलरोटी और अस्पताल की चारपाई में बदल देती है
जहाँ
आदमी और, और जिन्दा रहने की कोशिश करते हुए
एक दिन जमीन में गड़ जाता है ।
होशियार कवि उसे अपनी कविता की विषय-वस्तु में
ढालकर
खुद के सरकारीकरण की जमीन तैयार कर लेता है
मरने के बाद
सरकारीकरण के बाद उसकी आत्मा को मिली हुई शान्ति
क्रान्ति के भूतपूर्व नारों का मजाक उड़ाती है
जैसे
नंगे पैर चलते ग्रामीण के चेहरे पर
धूल और धुआँ फेंकती जीप ।

Character Building camps being organised by
Arya Samaj Nizamabad and Arya Samaj Dhood bowli Hyderbad
Acharya Ved Mitra ji and Arya Pratinidhi Sabha Joint Secretary Sri Ramchandra Kumar,
Vijayendra and Acharya Vishwashrava ji with Students in below photos

कभी नहीं सोचा था कि सीनेटर बनूंगी

जीना इसी का नाम है

कृष्णा कुमारी कोहली
पाकिस्तानी सीनेटर

मेरे माता-पिता बंधुआ मजदूर थे। उन्होंने बहुत प्रताड़ना सही। 16 साल की उम्र में मेरी शादी हो गई। लेकिन ससुरालवाले अच्छे थे। उन्होंने मुझे आगे पढ़ने की इजाजत दी। मैं चाहती थी कि बाकी लड़कियों को भी पढ़ने का मौका मिले, इसलिए शुरू किया।

पाकिस्तान के सिंध प्रांत स्थित नगरपारकर कस्बे के एक छोटे से गांव में पली-बढ़ी कृष्णा ने बचपन से गुलामी का दंश सहा। उनके माता-पिता बंधुआ मजदूर थे। इलाके के दबंग जमींदार ने उनके पूरे परिवार को तीन साल तक एक जेलनुमा इलाके में कैद करके रखा। मजदूरों को काम के बदले बस दिन में दो बार खाना मिलता था। जमींदार का आदेश न मानने पर मजदूरों को प्रताड़ित किया जाता था।

कैंप के बंधुआ मजदूर सुबह से देर शाम तक खेतों में मजदूरी करते और उनके बच्चे बेसहारा होकर इधर-उधर घूमते रहते। इस बीच एक संस्था ने मजदूरों के बच्चों के लिए इलाके में अस्थाई स्कूल खोल दिया। कृष्णा उस स्कूल में पढ़ने लगीं। पढ़ाई में उनका खूब मन लगता था। जमींदार के शोषण से बेहाल माता-पिता पूरे दिन खेतों में काम करते और रात को थककर सो जाते। वे खुद कभी स्कूल नहीं गए, इसलिए उन्होंने कभी नहीं सोचा कि बेटी को पढ़ाना चाहिए। उन्हें पता भी नहीं था कि दिन में उनकी बेटी पढ़ाई में व्यस्त रहती है।

परिवार ने बंधुआ मजदूरी को अपनी नियति मान लिया था। जमींदार की जेल में दम घुटता, पर कभी हिम्मत नहीं पड़ी वहां से भागने की। हर समय भय लगा रहता, कहीं किसी को खबर लग गई, तो बुरी तरह पिटाई होगी। लेकिन एक दिन अचानक सब कुछ बदल गया। पुलिस की टीम ने वहां छापा मारा और सभी बंधुआ मजदूरों को रिहा कर दिया। जमींदार को गरीब मजदूरों को प्रताड़ित करने के जुर्म में सजा मिली। तब कृष्णा कक्षा तीन में पढ़ती थीं। बंधुआ मजदूरी से मुक्ति मिलने के बाद उनका परिवार दूसरे गांव में आ गया। मगर पेट पालने के लिए मजदूरी तो करनी ही थी। उनके पास अपने खेत नहीं थे, इसलिए वे दूसरों के खेत में काम करने लगे। लेकिन अब जीवन बेहतर था। उन्हें काम के बदले वेतन मिलने लगा था। उन्हें जमींदार की प्रताड़ना नहीं सहनी पड़ती थी। उन्हें कहीं भी आने-जाने की आजादी थी। कृष्णा तब बहुत छोटी थीं, पर बंधुआगिरी का दर्द और आजादी की खुशी का अंतर महसूस करने लगी थीं।

उन्होंने परिवार से पढ़ने की जिद की और पास के स्कूल में अपना दाखिला करवा लिया। यह 1994 की बात है। तब वह नौवीं कक्षा में पढ़ रही थीं। मन में कुछ करने की तमन्ना थी। वह परिवार को गरीबी के दंश से आजाद कराना चाहती थीं। सोचा था, पढ़-लिखकर नौकरी करूंगी और माता-पिता को अच्छी जिंदगी दूंगी। लेकिन घरवालों ने उनकी शादी तय कर दी। लड़के का परिवार पढ़ा-लिखा था। घरवाले किसी हालत में यह रिश्ता हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे। उनका कहना था, गरीबी के हालात में वह बेटी को आगे नहीं पढ़ा पाएंगे। कृष्णा आगे पढ़ना चाहती थीं, पर परिवार ने एक नहीं सुनी।

कृष्णा बताती हैं, 16 साल की उम्र में मेरी शादी हो गई। पर मैं किस्मतवाली थी। मेरे पति खुले विचारों के थे। जब उन्हें पता चला कि मैं आगे पढ़ना चाहती हूं, तो उन्होंने मुझे स्कूल जाने की इजाजत दे दी। इस तरह शादी के बाद उनकी पढ़ाई जारी रही। उन्होंने पहले दसवीं, फिर 12वीं की परीक्षा अच्छे अंकों से पास की। आत्मविश्वास बढ़ता गया। घर के कामकाज के बाद उनका पूरा समय पढ़ाई में बीतने लगा। 2013 में समाजशास्त्र से मास्टर डिग्री हासिल की। उनका ससुराल थार इलाके में था, जहां पानी की बड़ी किल्लत थी। इलाके के ज्यादातर महिलाएं अनपढ़ थीं। गरीबी और बेरोजगारी ने उनकी जिंदगी को बदतर बना दिया था। कृष्णा महिलाओं को शिक्षा के बारे में जागृत करने लगीं। वह कहती हैं, मेरा बचपन गरीबी में बीता। मेरे परिवार ने बंधुआ मजदूरी की। मैंने उन्हें प्रताड़ित होते हुए देखा। इसलिए मेरे मन में लोगों के लिए कुछ करने की तड़प थी। और मैं महिला शिक्षा पर काम करने लगी।

पढ़ाई के साथ उनका समय समाजसेवा में बीतने लगा। कृष्णा बताती हैं, हम बस्तियों में जाने लगे। हम लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। मेरे मन में एक ही बात थी कि पढ़ाई के जरिए ही गरीबी से लड़ा जा सकता है। मेरे पति ने हमेशा मुझे प्रेरित किया, इसलिए मेरा अभियान आगे बढ़ता रहा। इस बीच उनका पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेताओं से संपर्क हुआ और वह पार्टी सदस्य बन गईं। बतौर पार्टी कार्यकर्ता उनके काम को पहचान मिली। कृष्णा कहती हैं, मैंने कभी नहीं सोचा कि मुझे क्या लाभ होगा? बस मैं लोगों की मदद करना चाहती थी। राजनीति में आने का कोई इरादा नहीं था। कभी नहीं सोचा था कि एक दिन सीनेटर बनूंगी।

साल 2007 में उन्हें इस्लामाबाद में आयोजित मानवाधिकार युवा लीडरशिप ट्रेनिंग कैंप में हिस्सा लेने का मौका मिला। ट्रेनिंग के दौरान उन्हें पलायन करने वाले लोगों की समस्याओं और अधिकारों के बारे में पता चला। इस साल पीपीपी ने उन्हें सीनेटर नामित किया। मार्च में वह पाकिस्तान की पहली पहली हिंदू दलित सीनेटर बनीं। कृष्णा कहती हैं, अच्छा लगता है, जब लोग मुझे पहली हिंदू दलित सीनेटर कहते हैं। इससे समाज के निचले तबके को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रस्तुति: मीना त्रिवेदी

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-05-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52?90/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax : 040-24557946
Request to donate Rs. 250/- సంపాదకులు -విఠల్ రావు, మంత్రి సభ

To,

हरिद्वार में
६, ७, ८ जुलाई २०१८ को
अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन
भारतीय आर्ष शिक्षा प्रणाली से हो भारत का पुनरुत्थान

महात्मा गांधी को नेताओं ने और कांग्रेस ने पूजा की वस्तु बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। स्वतंत्र भारत में गांधी जी के विचारों पर अमल नहीं करने का अक्षम्य अपराध किया गया है। गांधी जी की नेहरू पर अति विश्वास था, वे नेहरू का पश्चिमी जीवन पद्धति के प्रति अंध विश्वास पर ध्यान नहीं दे सके थे और उस नेहरू के हाथ में देश सौंपने में सहायक बन गए। जिसका परिणाम यह निकला कि नेहरू ने 'भारत'को 'भारत'नहीं 'इण्डिया' बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

गांधी को चाहिए था कि वे स्वयं देश की सत्ता संभालते, तो भारत का निर्माण भारतीयता पर आधारित हो जाता। ऐसी ही ऐतिहासिक भूल जयप्रकाश नारायण से हो गई, उन्हें भी अपने सपनों का सप्त क्रांति को साकार करने के लिए स्वयं सत्ता अपने हाथ में ले लेना थी। गांधी का भारत, भारत की संस्कृति, पहनावा, खान-पान, रहन-सहन, जीवन-पद्धति,ज्ञान-विज्ञान और इतिहास पर अटूट विश्वास था जो उनके जीवन-दर्शन और कर्मों से उजागर हुआ है।

गाँधी ने अपने विचारों को आचरण से जिया। देश भारत बन कर अपने प्राचीन गौरव को अपनावें इसके लिए उन्होंने अहिंसा की अवधारणा प्रस्तुत की। भारत गाँवों में बसा हुआ है, गाँव स्वावलंबी बने, इसके लिए ग्रामोद्योग और हस्तकरघा और कुटीर उद्योग जैसे कार्यों की प्रेरणा दी।

भारत की तरुणाई भारतीयता के आधार पर देश के निर्माण में सहभागी बने, इसके लिए गांधी ने बालपन से लेकर उच्चत्तम स्तर तक की शिक्षा-प्रणाली का चिंतन प्रस्तुत किया जिसके अनुसार अपनी भाषाओं के आधार पर,अपनी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने पर पूरे देश में घूम कर लोगों को जागरुक किया। पूरी शिक्षा-प्रणाली भारतीयता पर आधारित हो, इसके लिए हर संभव ध्यान दिया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव मंत्री सभा ने सभा की ओर से समता पॉवर प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.